



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 161]

No. 161]

नई दिल्ली, सोमवार, जून 18, 2007/ज्येष्ठ 28, 1929

NEW DELHI, MONDAY, JUNE 18, 2007/JYAISTHA 28, 1929

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 18 जून, 2007

अंतिम जांच परिणाम

विषय : थाइलैंड, इंडोनेशिया, मलेशिया और चीनी ताइपेई से आंशिक रूप से विन्यासित यार्न (पीओवाई) के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच : निर्णायक समीक्षा के अंतिम जांच परिणाम

सं. 15/9/2005-डीजीएडी.—1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 तथा सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं का अभिज्ञान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण के लिए) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए :

1. यतः मेसर्स एसोसिएशन ऑफ सिन्थेटिक फाइबर इण्डस्ट्रीज (जिन्हें एतदपश्चात् आवेदक कहा गया है) ने प्रथम दृष्टया साक्ष्यों के साथ सूचना पत्र जिसमें आवेदकों ने संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयात के कारण पाटन एवं क्षति के जारी रहने की संभावना को आरोप लगाते हुए प्राधिकारी से पाटनरोधी शुल्क को पाँच वर्ष की मूल अवधि से बाद भी जारी रखने का अनुरोध किया था के प्रत्युत्तर में घरेलू उत्पादकों नामतः मेसर्स आर्फीज इण्डस्ट्रीज लि., मेसर्स अपोलो फाइबर्स लि., मेसर्स सेन्ट्रल इण्डिया पोलीएस्टर्स लि., मै. सेंचुरी एंका लि., मै. फिलाटेक्स इंडस्ट्रीज लि., मै. गार्डन सिल्क मिल्स लि., मेसर्स इण्डोरामा सिन्थेटिक्स (इण्डिया) लि., मै. जे. जी. एफ. लि., मै. मार्डन पेट्रोफिल्स लि., मै. नाकोडा टेक्सटाइल इंडस्ट्रीज लि. मेसर्स रेक्रॉन सिन्थेटिक्स लि. तथा मेसर्स वेलस्पन सिंटेक्स लि. की ओर से एक आवेदन निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें एतदपश्चात् प्राधिकारी कहा गया है) के समक्ष प्रस्तुत किया। यह भी कहा गया था कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयात पर से पाटनरोधी शुल्क हटाये जाने से पाटन और क्षति के जारी रहने या इसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है और घरेलू उद्योग ने संबद्ध वस्तुओं पर लागू पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा की शुरुआत करने के लिए प्राधिकारी से अनुरोध किया था।

2. और यतः प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की ओर से आवेदक द्वारा प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर भारत के राजपत्र, असाधारण में दिनांक 20 दिसम्बर, 2005 को प्रकाशित एक सार्वजनिक सूचना जारी

की, जिसमें सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम और पाटनरोधी नियमावली के अनुसार यह निर्धारित करने के लिए संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहाँ से निर्यातित संबद्ध वस्तु पर लागू पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा की गई कि क्या संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयात पर से पाटनरोधी शुल्क हटाये जाने से पाटन और क्षति के जारी रहेगी या इसकी पुनरावृत्ति होगी।

प्रक्रिया

3. जाँच के संबंध में निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई है।

(ii) प्राधिकारी द्वारा उपर्युक्त सार्वजनिक सूचना की प्रति ज्ञात निर्यातकों, आयातकों/प्रयोक्ताओं तथा आवेदक को अग्रेषित की गई और नियम 6(2) के अनुसरण में उन्हें अपने विचार जांच शुरुआत अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख से चालीस दिनों के भीतर लिखित में अवगत कराने का अवसर भी दिया गया;

(iii) संबंधित नियम 6 के उप-नियम (3) के अनुसार प्राधिकारी द्वारा आवेदन की प्रति संबद्ध देशों के ज्ञात निर्यातकों/ विनिर्माताओं और भारत स्थित संबद्ध देशों के दूतावासों को उपलब्ध कराई गई थी।

(iv) जाँच शुरुआत संबंधी अधिसूचना के जवाब में मै0 हुआलोन कार्पोरेशन, मलेशिया और इंडोनेशिया से मै0 पोलिसिंडो को छोड़कर संबद्ध देशों से किसी भी निर्यातक/उत्पादक ने निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है। प्राधिकारी द्वारा तत्पश्चात सहयोगी निर्यातकों के परिसरों में मौके पर सत्यापन के पश्चात उनकी सूचना का सत्यापन किया गया है और सहयोगी निर्यातकों को उनकी टिप्पणियों हेतु सत्यापन रिपोर्ट जारी की गई थी। इन दोनों निर्यातकों की सत्यापन रिपोर्ट जारी किए जाने के बाद निर्धारित तिथि के भीतर कोई टिप्पणियाँ प्राप्त नहीं हुई थी।

(v) नियम 6(2) के अनुसार संबद्ध देशों के दूतावासों को जांच शुरुआत के बारे में सूचित किया गया और उनके देश के निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित अवधि में प्रश्नावली के उत्तर भिजवाने की सलाह देने का अनुरोध किया गया। निर्यातकों को प्रेषित पत्र, आवेदन तथा प्रश्नावली की प्रति भी उन्हें भेजी गई थी।

(vi) नियम 6(4) के अनुसरण में संबद्ध वस्तुओं के निम्नलिखित निर्यातकों/प्रयोक्ता एसोसिएशनों को प्रश्नावली सूचनार्थ भेजी गई थी :

1. ऑल इण्डिया टेक्सचराइजर्स एसोसिएशन, मुम्बई
2. साऊथ गुजरात टेक्सचराइजर्स वेलफेयर एसोसिएशन, सूरत
3. सनटेक्स इण्डिया
4. गॅलेक्सी टेक्सटाइल्स
5. हारमनी यार्न्स प्रा. लि.
6. ए वी एम एक्सपोर्टर्स
7. गर्ग टेक्स- ओ- फैब लिमिटेड
8. बोधारा पॉलीफैब प्रा. लि.
9. सिल्वासा इण्डस्ट्रीज लि.
10. बीकेलॉन सिन्थेटिक्स लि.

11. आलोक इण्डस्ट्रीज लि.
12. बजारी फिलामेंट्स प्रा. लि.
13. सिद्धवन यार्न्स लि.
14. क्रिम्प्लॉन यार्न्स
15. यूनी टेक्स टेक्सचराइजर्स
16. यूनीफाई टेक्सचराइजर्स
17. घमटेक्स (इण्डिया) प्रा. लि.
18. मेहराटेक्स इण्डिया प्रा. लि.
19. एस आर वी पॉलीटेक्स प्रा. लि.
20. सिनफैब्स सेल्स एण्ड इण्डस्ट्रीज लि.

(vii) उपर्युक्त अधिसूचना के उत्तर में मेसर्स ऑल इण्डिया टेक्सचराइजर्स एसोसिएशन, मुम्बई और फेडरेशन ऑफ इण्डियन आर्ट सिल्क वीविंग इण्डस्ट्री (एफआईएसडब्ल्यूआई) ने अपने विवरण प्रस्तुत किए हैं। उनके विवरणों पर पाटनरोधी जांच की सुसंगत सीमा तक विचार करके उनकी जांच की गई है।

(viii) अन्य हितबद्ध पक्षों ने भी जब अनुरोध किया, उन्हें अगोपनीय आवेदन की प्रति भिजवा दी गई।

(ix) नियम 6(7) के अनुसार प्राधिकारी ने सार्वजनिक फाइल के रूप में विभिन्न हितबद्ध पक्षों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय पाठ उपलब्ध कराया और हितबद्ध पक्षों के निरीक्षणार्थ उसे एक सार्वजनिक फाइल के रूप में रखा गया।

(x) इस बात के अभिनिश्चय के लिए कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग की क्षति दूर करने की दृष्टि से पर्याप्त होगा; सामान्यतया स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जीएएपी) तथा आवेदक द्वारा प्रस्तुत जानकारी के आधार पर इष्टतम उत्पादन लागत तथा भारत में सम्बद्ध वस्तुओं के निर्माण व बिक्री संबंधी लागत की लागत जांच की गई।

(xi) निर्दिष्ट प्राधिकारी की अध्यक्षता में दिनांक 23 अगस्त, 2006 को एक सार्वजनिक सुनवाई का आयोजन किया गया, जिसमें घरेलू उद्योग व अन्य हितबद्ध पक्षों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। तथापि, सुनवाई की प्रक्रिया के दौरान एक हितबद्ध पक्ष ने तर्क दिया कि उन्हें सार्वजनिक सुनवाई की सूचना यथासमय प्राप्त नहीं हुई; अतः उन्होंने एक और सुनवाई के आयोजन का अनुरोध किया। हितबद्ध पक्ष के अनुरोध पर प्राधिकारी दूसरी सुनवाई के लिए सहमत हो गए जिसका आयोजन 20 सितम्बर, 2006 को किया गया। सार्वजनिक सुनवाई में उपस्थित हितबद्ध पक्षों से मौखिक रूप में व्यक्त उनके विचारों को लिखित रूप में प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया। प्राधिकारी ने इन जाँच परिणामों में हितबद्ध पक्षों से प्राप्त लिखित विवरण तथा उनके उत्तरों पर विचार किया है।

(xii) इस अधिसूचना में **** एक हितबद्ध पक्ष द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना प्रदर्शित करता है, जिसे प्राधिकारी ने उसके गुणों के आधार पर नियमावली के तहत गोपनीय माना है। ऊपर उल्लिखित

नियमावली के नियम 16 के अनुसरण में इन जाँच परिणामों हेतु विचारित अनिवार्य तथ्यों/आधारों से ज्ञात हितबद्ध पक्षों को दिनांक 26 अप्रैल, 2007 को अवगत करा दिया गया था और इन पर विभिन्न हितबद्ध पक्षों से प्राप्त टिप्पणियों पर अंतिम जाँच परिणाम में विधिवत ढंग विचार किया गया है।

(xiii) जांच 1 अप्रैल, 2004 से शुरू करके 30 जून, 2005 (15 माह) तक की अवधि अर्थात् जांच अवधि (पीओआई) हेतु की गई। क्षति विश्लेषण के संदर्भ में प्रवृत्तियों की जांच हेतु 2001-02, 2002-03, 2003-04 तथा जांच अवधि (पीओआई) को शामिल किया गया।

ख. विचाराधीन उत्पाद, समान वस्तु एवं घरेलू उद्योग

ख.1: विचाराधीन उत्पाद

4. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद आंशिक रूप से विन्यासित यार्न है, जिसे सामान्यतः पीओवाई कहा जाता है। यह भारतीय सीमाशुल्क टैरिफ वर्गीकरण के अंतर्गत सीमाशुल्क टैरिफ शीर्ष 5402 (सीमाशुल्क उपशीर्ष के साथ जो अब 54024600 है) में आता है। तथापि उक्त सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और वर्तमान जांच के दायरे पर किसी भी रूप में बाध्यकारी नहीं है। यह पॉलिएस्टर का एक यार्न है और एक मध्यवर्ती वस्तु है, जिसे कपड़ा बनाने में बुनाई अथवा नीटिंग के अनुकूल बनाने के लिए आगे की प्रक्रिया उदाहरणार्थ टेक्सचरिंग अथवा ड्रॉ ट्विस्टिंग से गुजरना होता है। आयातकों और प्रयोक्ताओं ने तर्क दिया है कि आवेदक ने जिस डेनियर के लिए जांच की मांग की है, उसे विनिर्दिष्ट नहीं किया है क्योंकि इसका उत्पादन व्यापक रेंज में किया जाता है। यह भी तर्क दिया गया है कि सम्बद्ध वस्तुओं का विनिर्माण विभिन्न प्रक्रियाओं व कच्चे माल से होता है और सम्बद्ध वस्तुओं का वर्गीकरण कच्चे माल के स्रोत के आधार पर किया जाना चाहिए।
5. दूसरी ओर आवेदकों ने दावा किया है कि आवेदन में विनिर्दिष्ट सम्बद्ध वस्तुओं में सभी प्रकार के डेनियर शामिल हैं और आवेदन में सम्बद्ध वस्तुओं के डेनियर विनिर्दिष्ट करने की आवश्यकता नहीं है। अतः उनका तर्क है कि आयातकों तथा प्रयोक्ताओं के विवरण आधारहीन हैं और गुणविहीन हैं।

6. विभिन्न हितबद्ध पक्षों द्वारा उठाए गए मुद्दों की जांच की गई है और जांच के उपरान्त यह नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग के आवेदन में भी डेनियर शामिल किए गए हैं। इसके अलावा निर्दिष्ट प्राधिकारी ने भी समस्त विचाराधीन उत्पाद पर विचार करते हुए विश्लेषण किया है। हितबद्ध पक्षों के इस विवरण के संबंध में, कि टेफ्लॉन उपचारित पोलिएस्टर यार्न तथा पोलिएस्टर नैनो टेक्नोलॉजी यार्न का उत्पादन याचिकाकर्ताओं द्वारा नहीं किया जाता, अतः इन्हें विचाराधीन उत्पाद के दायरे से बाहर कर दिया जाना चाहिए; प्राधिकारी द्वारा नोट किया गया कि ये यार्न पीओवाई के दायरे में नहीं आते, क्योंकि इन उत्पादों को आगे और प्रोसेस किया जाता है। इसके अलावा यह भी नोट किया जाता है कि मै0 हुआलोन और मै0 पोलीसिंडो को छोड़कर सम्बद्ध देश के निर्यातकों ने उनके द्वारा भारत को निर्यातित तथा निर्यातक देश में बेचे जा रहे विचाराधीन उत्पाद की विभिन्न ग्रेडों तथा प्रकारों/डेनियरों का विवरण नहीं दिया है। दोनों सहयोगी निर्यातकों में से भी मै0 हुआलोन कार्पोरेशन ने कोई तर्क नहीं दिया है इसके अलावा किसी भी आयातक ने प्राधिकारी को 'साक्ष्य सहित सूचना नहीं दी है अथवा विचाराधीन उत्पाद की डेनियरवार जांच का अनुरोध प्राधिकारी ने नहीं किया है। प्राधिकारी ने इस मुद्दे पर व्यक्त किए गए विचारों की जांच की है और उनका अभिमत है कि विचाराधीन उत्पाद में किसी प्रकार की अयोग्यता नहीं है, जैसा कि आयातकों/प्रयोक्ताओं ने दावा किया है। अतः जांच में यथा परिभाषित तथा पिछले पैराग्राफ में उल्लिखित विचाराधीन उत्पाद की अंतिम जांच परिणाम में पुष्टि की जाती है।

ख.2: समान वस्तु

7. पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(घ) में समान वस्तु को निम्नानुसार परिभाषित किया गया है :

* समान वस्तु का तात्पर्य ऐसी किसी वस्तु से है जो भारत में पाटन किए जाने हेतु जांचाधीन उत्पाद से हर प्रकार से समनुरूप अथवा समान हो अथवा ऐसी वस्तु के अभाव में ऐसी अन्य वस्तु से है

जो हालांकि हर प्रकार से समान नहीं है किन्तु उसकी विशेषताएं जांचाधीन वस्तु की विशेषताओं से अत्यधिक मिलती जुलती हों । "

आवेदकों ने दावा किया है कि भारत में जिन सम्बद्ध वस्तुओं का पाटन किया जा रहा है, घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तुओं के समान हैं । पाटित आयातों और घरेलू रूप से उत्पादित सम्बद्ध वस्तु के तकनीकी विनिर्देशनों, गुणवत्ता, कार्यों अथवा अंतिम उपयोग में कोई भिन्नता नहीं है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि न तो निर्यातकों और न ही हितबद्ध पक्षों ने इस तथ्य का खण्डन किया है कि पाटित वस्तुओं और घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित विचाराधीन उत्पाद में कोई भिन्नता है । प्राधिकारी नोट करते हैं कि आयातित वस्तुओं का उपयोग प्रयोक्ता उद्योग द्वारा, घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तुओं के स्थान पर किया जाता है । घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुएं और संबद्ध देश द्वारा उत्पादित वस्तुएं तकनीकी तथा वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं और पाटनरोधी नियमावली के तहत सम्बद्ध देशों से आयातित वस्तुओं के समान ही " समान वस्तुएं " हैं ।

ख.3: घरेलू उद्योग

8. नियम 2(ख) में घरेलू उद्योग को निम्नानुसार परिभाषित किया गया है :-

(ख) " घरेलू उद्योग " से तात्पर्य उन सभी घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण में अथवा उससे संबंधित कार्यकलाप में संलग्न है अथवा जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उस वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का प्रमुख अनुपात है; सिवाय उस स्थिति के जब ये उत्पादक कथित पाटित वस्तु के निर्यातकों अथवा आयातकों से संबंधित हों अथवा स्वयं उसके आयातक हों और ऐसे मामले में ऐसे उत्पादकों को घरेलू उद्योग का भाग नहीं माना जाएगा :

यह नोट किया जाता है कि यह आवेदन मेसर्स एसोसिएशन ऑफ सिन्थेटिक फाइबर इण्डस्ट्री, नई दिल्ली द्वारा घरेलू उद्योग जिसमें भारत में सम्बद्ध वस्तुओं के निम्नलिखित उत्पादक शामिल हैं, की ओर से प्रस्तुत किया गया है :-

- I. अरफीस इंडस्ट्रीज लि०
- II. अपोलो फाइबर्स लि०
- III. सेंट्रल इंडिया पॉलिस्टर्स लि०
- IV. सेंचुरी एंका लि०
- V. फिलाटेक्स इंडस्ट्रीज लि०
- VI. गार्डेन सिल्क मिल्स लि०
- VII. इंडो रामा सिन्थेटिक्स (इंडिया) लि०
- VIII. जेबीएफ लि०
- IX. मॉडर्न पेट्रोफिल्स लि०
- X. नकोडा टेक्सटाइल्स इंडस्ट्रीज लि०
- XI. रेक्रॉन सिन्थेटिक्स लि०
- XII. वेलस्पन सिन्टेक्स लि०

9. प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस आवेदन का निम्नलिखित उत्पादकों द्वारा भी समर्थन किया गया है:-

- क. रिलायंस इंडस्ट्रीज लि०
- ख. सांघी पॉलिस्टर्स लि०
- ग. नोवा पेट्रोकेमिकल्स लि०
- घ. गोकुलानन्द पेट्रोफाइबर्स
- ड. राजवी पेट्रोकेम (प्रा०) लि०

10. आवेदकों द्वारा प्रस्तुत सूचना की जाँच से यह नोट किया जाता है कि ऊपर उल्लिखित उत्पादकों का समग्र उत्पादन समान वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का प्रमुख हिस्सा बनता है और इसलिए वह संबंधित नियमावली के नियम 2(ख) के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग का प्रतिनिधित्व करते हैं।

ख.4: जाँच की अवधि

11. विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों ने यह भी कहा है कि जाँच अवधि 12 महीनों की अर्थात् 2004-05 और न कि 15 महीनों की, जैसा कि इस जाँच में प्राधिकारी द्वारा किया गया है, होनी चाहिए। इस मुद्दे की जाँच की गई है और यह विचार किया गया है कि इस निदेशालय की स्थापित प्रथा के अनुसार जाँच अवधि यथा संभव (जाँच शुरूआत की तारीख के) अद्यतन होनी चाहिए और जाँच अवधि की अंतिम तारीख तथा जाँच शुरूआत की तारीख के बीच का अंतर छह महीनों से अधिक नहीं होना चाहिए। प्राधिकारी द्वारा यह नोट किया गया है कि यदि जाँच की अवधि 2004-05 ली जाती तो जाँच अवधि और जाँच शुरूआत की तारीख के बीच का अंतर छह महीनों से अधिक होता और यह नीति के अनुरूप नहीं होता। अतः प्राधिकारी द्वारा 15 महीनों की जाँच अवधि का निर्धारण जाँच अवधि को यथासंभव जाँच शुरूआत की तारीख के निकट रखने और किसी भी स्थिति में जाँच शुरूआत की तारीख से छह माह से अनधिक होने तथा एक पूर्ण वित्त वर्ष के रूप में घरेलू उद्योग की सूचना की सहज उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी की प्रथा के अनुरूप है। यह भी नोट किया गया था कि इस जाँच में बड़ी संख्या में घरेलू उद्योग शामिल थे और 12 महीनों के वित्त वर्ष में से 9 महीनों के आँकड़े प्राप्त करने में न केवल प्राधिकारी को बल्कि घरेलू उद्योग को भी कठिनाई होती।

ग. संबद्ध देशों से पाटन का जारी रहना और पाटन मार्जिन का निर्धारण

ग.1 चीनी ताइपेई और थाईलैंड हेतु सामान्य मूल्य

12. इन दोनों देशों के किसी भी उत्पादक या निर्यातक ने कोई सहयोग नहीं किया था। थाइलैंड से कुछेक उत्पादकों और निर्यातकों ने कुछ प्रश्न पूछे थे और विस्तार के लिए कहा था परंतु अन्ततः प्राधिकारी द्वारा अनेक बार अनुरमारक भेजे जाने के बावजूद उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। थाइलैंड से उत्पादकों के निर्यातकों जिन्होंने जाँच अवधि के दौरान अपने बारे में जानकारी दी थी, को इस तथ्य का स्मरण कराया गया था कि पाटनरोधी करार के अनुबंध -II के पैरा 1 के अनुसार यदि निर्धारित समय के भीतर सूचना उपलब्ध नहीं कराई जाती है तो प्राधिकारी घरेलू उद्योग द्वारा जाँच की शुरूआत हेतु आवेदन में दी गई सूचनाओं समेत उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारण करने के लिए स्वतंत्र हैं। बार-बार अनुस्मारक भेजने के बावजूद किसी भी हितबद्ध पक्षकार से निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर प्रश्नावली में बताई गई पद्धति और ढंग से प्राप्त नहीं हुआ था और इसलिए पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार प्राधिकारी ने सर्वोत्तम उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर सामान्य मूल्य के निर्धारण की प्रक्रिया अपनाई है। इन दो संबद्ध देशों के संबंध में प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के लिए बिक्री, सामान्य और प्रशासनिक खर्चों और तर्कसंगत लाभ समेत उत्पादन की परिकलित लागत पर विचार करते हुए थाइलैंड और चीनी ताइपेई में संबद्ध वस्तु के लिए सामान्य मूल्य निर्धारित किया है। थाइलैंड से सभी उत्पादकों

और निर्यातकों के लिए परिकलित सामान्य मूल्य *** अम.डा./मी.टन निर्धारित किया जाता है जबकि चीनी ताइपेई के लिए यह *** अम.डा./मी.टन निर्धारित किया जाता है।

ग 2: चीनी ताइपेई और थाईलैंड के लिए निर्यात कीमत

13. जाँच की शुरुआत के लिए प्रस्तुत किए गए आवेदन में आवेदक ने डीजीसीआई एण्ड एस आयात आँकड़ों के आधार पर निर्यात कीमत का परिकलन किया था। प्राधिकारी ने भी डीजीसीआई एण्ड एस से प्राप्त आयात आँकड़ों की जाँच की और यह पाया गया था कि सीमाशुल्क टैरिफ शीर्ष 5402.42, जो विचाराधीन उत्पाद के लिए समर्पित कोड है के अंतर्गत आयातों की मात्रा एवं मूल्य दिए गए थे। इसके अलावा सार्वजनिक सुनवाई और हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निवेदनों के दौरान यह दर्शाया गया था कि आयात की मात्रा एवं मूल्य का निर्धारण करते समय प्राधिकारी ने पीओवाई से इतर यानों के आयातों से संबंधित कई सौदों पर विचार किया था। सार्वजनिक सुनवाई के बाद प्राधिकारी ने संबंधित देशों से विचाराधीन उत्पाद के आयात से संबंधित सौदे-वार सूचना की पुनः जाँच की थी और यह पाया गया था कि यद्यपि आईटीसीएस वर्गीकरण विचाराधीन उत्पाद के लिए समर्पित कोड है, तथापि उसमें स्पिन ड्रॉन यार्न तथा फुली ड्रॉन यार्न और अन्य यानों के कुछ सौदे भी शामिल हैं। जाँच के बाद प्राधिकारी ने संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों की मात्रा एवं मूल्य का पुनः परिकलन किया है और पुनः जाँच के बाद, डीजीसीआई एण्ड एस के सौदावार आयात आँकड़ों के अनुसार थाईलैंड से सभी उत्पादकों और निर्यातकों के लिए सीआईएफ निर्यात कीमत **** अम.डॉ. प्रति मी. टन निर्धारित की गई थी। समुद्री बीमा, कमीशन, समुद्री भाड़ा, बैंक प्रभार तथा पत्तन व्ययों के लिए कीमत समायोजनों पर विचार करने के बाद निवल निर्यात कीमत **** अम. डॉ. प्रति मी. टन निर्धारित की गई है। चीनी ताइपेई से हुए आयातों के संबंध में डीजीसीआई एण्ड एस के सौदावार आयात आँकड़ों के अनुसार चीनी ताइपेई से सभी उत्पादकों और निर्यातकों के लिए सीआईएफ निर्यात कीमत *** अम.डा./मी.टन निर्धारित की गई थी। समुद्री बीमा, कमीशन, समुद्री भाड़ा, बैंक प्रभार तथा पत्तन व्ययों के लिए कीमत समायोजनों पर विचार करने के बाद निवल निर्यात कीमत **** अम. डॉ. प्रति मी. टन निर्धारित की गई है।

ग 3: चीनी ताइपेई एवं थाईलैंड के लिए पाटन मार्जिन

14. परिकलित सामान्य मूल्य तथा कारखाना द्वार स्तर पर निर्धारित निवल निर्यात कीमत पर विचार करते हुए पाटन मार्जिन का निर्धारण किया गया है जो थाईलैंड के सभी उत्पादकों एवं निर्यातकों के लिए (***) अम0डा0/मी.टन) बनता है और निवल निर्यात कीमत का 13.75% है। चीनी ताइपेई के सभी उत्पादकों एवं निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन का निर्धारण समान पद्धति से किया गया है जो थाईलैंड के मामले में *** अम.डॉ./मी.टन है और निवल निर्यात कीमत का 49.71% बनता है।

ग 4: पॉलिसिन्डो, इंडोनेशिया के लिए सामान्य मूल्य

15. मै0 पॉलिसिन्डो निम्नलिखित पाँच उत्पादों का उत्पादन करती है : विभिन्न डेनियरों के पीओवाई, संरचित यार्न (डीटीवाई), पूर्ण रूप से विन्यासित यार्न (एफओवाई) तथा फाइबर चिप। पाँच प्रमुख उत्पादों में से चार का उत्पादन कलिवुंगु में किया जाता है जबकि चिप का उत्पादन भिन्न स्थान अर्थात् कारावांग में होता है। ज्ञातव्य है कि मै0 पॉलिसिन्डो ने निर्यातक प्रश्नावली में डेनियर, फिलामेंटों तथा उनके प्रकारों के बारे में सूचना उपलब्ध कराई थी और प्राधिकारी से पीसीएन (उत्पाद नियंत्रण संख्या) के अनुसार पाटन मार्जिन का निर्धारण करने का अनुरोध किया था। यह भी निवेदन किया गया था कि उन्होंने जाँच अवधि के दौरान भारत को कोई निर्यात बिक्री नहीं की थी और उन्होंने वैश्विक बाजार में संबद्ध वस्तुओं के केवल एक प्रकार का निर्यात किया था। निर्यातक प्रश्नावली की जाँच के

दौरान पहले यह निर्धारित किया गया था कि उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा संबद्ध देश में उनके पीसीएन (उत्पाद नियंत्रण नामावली) के संबंध में संबद्ध वस्तुओं की कुल घरेलू बिक्री, निर्यातक देश में बेची गई संबंधित संबद्ध वस्तुओं (समान पीसीएन हेतु) की कुल बिक्री की तुलना में प्रतिनिधिक थी अथवा नहीं। तत्पश्चात् इस बात की जांच की गई कि उनकी बिक्रियां (पीसीएनवार), पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध -1 के नियम -2 के संदर्भ में व्यापार के सामान्य क्रम में हैं अथवा नहीं। निर्यातकों ने घरेलू बाजार में की गई बिक्रियों का सौदेवार विवरण उपलब्ध कराया है। घरेलू बाजार में बेची गई संबद्ध वस्तुओं के डेनियर तथा श्रेणी के आधार पर विभिन्न प्रकारों की अलग-अलग भारित औसत बिक्री कीमत का निर्धारण करने के लिए इस सूचना पर विश्वास किया गया है। ऐसे मामलों में जहां घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तुओं के किसी विशिष्ट प्रकार की बिक्री मात्रा (इस मामले में केवल एक प्रकार) विश्व के सभी देशों के निर्यात के 5% से अधिक है, वहाँ घरेलू कीमत पर विचार किया गया है। निर्यातकों द्वारा दावा की गई उत्पादन लागत को भी उचित संशोधन के पश्चात् (सत्यापन दौरे के समय) स्वीकार किया गया है। यह भी जोड़ा जा सकता है कि संबद्ध वस्तुओं के केवल उपर्युक्त प्रकार के मामले में विनिर्माण की अलग-अलग लागतों को उपयुक्त संशोधनों के पश्चात् प्राधिकारी द्वारा स्वीकार किया गया था। (सामान्य मूल्य के तथ्यात्मक तत्वों के विवरण दर्शाने वाली सत्यापन रिपोर्ट की गोपनीय प्रति की एक प्रति निर्यातक को दी गई थी। इसके पश्चात् निर्यातक द्वारा कोई टिप्पणी नहीं की गई है)।

16. व्यापार के सामान्य क्रम के निर्धारण हेतु जांच के लिए उत्पादक द्वारा रखे गए रिकॉर्डों के संबंध में संबद्ध उत्पाद की उत्पादन लागत की जांच की गई थी। इसके अलावा संबद्ध वस्तुओं की उत्पादन लागत के संदर्भ में सभी घरेलू बिक्री सौदों की जांच की गई थी ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि घरेलू बिक्रियां, व्यापार के सामान्य क्रम में की गई थीं अथवा नहीं। अतः जहां लागत से कम बिक्री 20% से अधिक है वहां सहयोगी निर्यातक के लिए सामान्य मूल्य के निर्धारणार्थ केवल लाभकारी सौदों पर विचार किया गया है। निवल कारखाना द्वार घरेलू बिक्री कीमत *** अम.डॉ. प्रति किग्रा. थी।

ग 5: पॉलिसिन्डो, इन्डोनेशिया हेतु निर्यात कीमत

17. जाँच अवधि के दौरान भारत को कोई निर्यात नहीं किए गए थे। भारत को निर्यात बिक्री के अभाव में प्राधिकारी ने पाटन की संभावना (संभावित पाटन मार्जिन) के निर्धारण के प्रयोजनार्थ अन्य देशों को संबद्ध वस्तुओं की निर्यात कीमत का निर्धारण किया है। यह नोट किया गया था कि मै0 पॉलिसिन्डो ने अन्य देशों को निर्यात बिक्री हेतु परिशिष्ट 3ग में *** सौदों को सूचित किया है। कारखाना द्वार बिक्री कीमत का निर्धारण करने के लिए, बीजक कीमत में से पॉलिसिन्डो द्वारा वहन किए गए विभिन्न व्ययों में कटौती की गई है। दावा किए गए समायोजनों में कमीशन, अंतर्देशीय बीमा, अंतर्देशीय भाड़ा, समुद्री भाड़ा, समुद्री बीमा तथा बैंक प्रभार/ब्याज शामिल हैं। सभी समायोजनों का सत्यापन करने के पश्चात्/कारखाना द्वार निवल निर्यात कीमत *** अम.डॉ./किग्रा. निर्धारित की गई थी।

प्रकटन विवरण के संबंध में की गई टिप्पणियों में निर्यातक ने कहा है कि जांच अवधि के दौरान भारत के अलावा अन्य देशों को पॉलिसिन्डो द्वारा किए गए सभी निर्यातों की भारित औसत बिक्री कीमत से भारत की बाजार वास्तविकता प्रदर्शित नहीं होती है। उनकी राय में चूंकि अर्जेंटीना का आर्थिक विकास भारत से मेल खाता है इसलिए प्राधिकारी को अर्जेंटीना की निर्यात कीमत पर विचार करना चाहिए था। इस मामले में पाटन मार्जिन नकारात्मक होगा और यदि इस निर्यातक के लिए उपायों को समाप्त कर दिया जाता है तो पाटन की पुनरावृत्ति की कोई संभावना नहीं होगी।

प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्यातक ने जाच अवधि के दौरान निर्यातक द्वारा निर्यात न किए जाने की स्थिति में निर्यात कीमत के निर्धारण के प्रयोजनार्थ किसी विशेष देश पर विचार करने हेतु किसी कारण या कानूनी प्राधिकारी का उल्लेख नहीं किया है। निर्यातक ने अर्जेंटीना की बाजार स्थितियों अथवा अपने दावे के समर्थन में किसी अन्य कारण से संबंधित कोई विवरण अथवा साक्ष्य भी उपलब्ध नहीं कराया है। केवल वक्तव्य दिया गया है कि अर्जेंटीना और भारत के आर्थिक विकास का स्तर समान है। किसी समर्थनकारी साक्ष्य अथवा विधिक प्रावधानों के अभाव में प्राधिकारी किसी विशेष देश की निर्यात कीमत पर विचार करना उचित नहीं समझते हैं।

ग.6: पॉलिसिन्डो, इंडोनेशिया हेतु पाटन मार्जिन

18. सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत के बीच उचित तुलना के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने कारखाना द्वार स्तर पर सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत का निर्धारण किया है। सामान्य मूल्य एवं निर्यात कीमत, समान अवधि से संबंधित है। दोनों कीमतें कर मुक्त हैं। अतः प्राधिकारी मानते हैं कि यह तुलना उचित है। ऊपर उल्लिखित पद्धति से निर्धारित सामान्य मूल्य तथा निवल निर्यात कीमत पर विचार करके पाटन मार्जिन का निर्धारण किया गया है जो **** अम.डॉ./मी. टन है और निवल निर्यात कीमत का 8.77% बनता है।

ग.7: इंडोनेशिया के अन्य निर्यातकों हेतु पाटन मार्जिन

19. भारत औसत निर्यात कीमत का निर्धारण सहयोगी निर्यातक के संबद्ध वस्तुओं की सबसे निम्न कीमत पर विचार करके किया गया है। असहयोगी निर्यातकों हेतु पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए, संबद्ध देश हेतु निर्धारित भारत औसत सामान्य मूल्य की तुलना संबद्ध देशों के असहयोगी निर्यातकों हेतु निर्धारित निवल निर्यात कीमतों के साथ की गई है जो समायोजनों के पश्चात *** अम.डॉ./मी. टन अथवा 12.12% बनती है।

ग.8: मै0 हुआलोन कॉर्पोरेशन, मलेशिया हेतु सामान्य मूल्य

20. मै0 हुआलोन कॉर्पोरेशन की फैक्ट्री निलाई, कुआलालम्पुर में स्थित है जहां विद्यार्थीन उत्पाद सहित विभिन्न उत्पादों का विनिर्माण किया जाता है। मै0 हुआलोन द्वारा विनिर्मित उत्पाद सीधी स्पिनिंग प्रक्रिया (पीटीए जमा एमईजी को फीडस्टॉक के रूप में लेकर पॉलिमर के रूप में परिवर्तित करने के पश्चात सीधे संबद्ध वस्तु में परिवर्तित करना) तथा चिप्स स्पिनिंग प्रक्रिया (उसी फीडस्टॉक को पॉलिमर में परिवर्तित करने के पश्चात चिप्स में और तत्पश्चात संबद्ध वस्तु में परिवर्तित करना) द्वारा प्राप्त किए जाते हैं। यह भी देखा गया था कि कम्पनी विभिन्न डेनियर्स, फिलामेंटों, अनुप्रस्थीय यार्न, पीओवाई तथा अन्य मानव-निर्मित फिलामेंट यार्नों में अलग-अलग वर्गीकृत किया जा सकता है। संबद्ध वस्तुओं का उत्पाद कुआलालम्पुर के समीप निलाई नामक एक स्थान पर किया जाता है। यह नोट किया गया था कि भारत को निर्यात बिक्री की तुलना में मै0 हुआलोन की घरेलू बिक्री पर्याप्त मात्रा में थी अतः परिशिष्ट-1 में दी गई घरेलू बिक्री को सत्यापन के प्रयोजनार्थ स्वीकार कर लिया गया था क्योंकि वह पाटनरोधी करार के अनुच्छेद -2 की पाद टिप्पणी में परिभाषित पर्याप्त घरेलू बिक्री के दायरे में आती है। इसके अलावा, रिकॉर्डों से इस बात का सत्यापन किया गया था कि उन्होंने घरेलू बाजार में 24 सौदे किए हैं और घरेलू बाजार में की गई बिक्री हेतु कारखाना द्वार कीमत का निर्धारण करने के लिए उनकी घरेलू बिक्री में हुआलोन द्वारा छूटों अथवा ऋण के रूप में किसी समायोजन का दावा नहीं किया गया है।

21. यह भी नोट किया जा सकता है कि निर्यातक ने उनके द्वारा उत्पादित विभिन्न ग्रेडों के संबंध में अलग-अलग उत्पादन लागत प्रस्तुत नहीं की हैं और न ही उनके द्वारा उत्पादित विभिन्न ग्रेडों के आधार पर जो उनके द्वारा घरेलू बाजार में बेचे जाते हैं तथा भारत एवं अन्य देशों को निर्यात भी किए जाते हैं;

982/16/7/286

पाटन मार्जिन के निर्धारण का दावा किया है। इस सूचना के आधार पर ऊपर उल्लिखित निवल कारखाना द्वार घरेलू बिक्री कीमत निर्यातक द्वारा विनिर्मित पीओवाई के सभी ग्रेडों से संबंधित है। अतः घरेलू बिक्रियों से संबंधित सूचना का पूर्ण रूप से सत्यापन कर लिया गया था और निवल घरेलू बिक्री कीमत का निर्धारण *** अम.डॉ./कि.ग्रा. के रूप में किया गया था।

ग.9: मै0 हुआलोन कॉर्पोरेशन, मलेशिया हेतु निर्यात कीमत

22. रिकॉर्डों के सत्यापन के पश्चात यह निर्धारित किया गया था कि फर्म ने जाँच अवधि के दौरान *** अम.डा. के कुल बीजक मूल्य पर संबद्ध वस्तुओं के *** मी. टन का निर्यात किया था। कारखाना द्वार बिक्री कीमत के निर्धारित हेतु बीजक कीमत में से मै0 हुआलोन द्वारा वहन किए गए विभिन्न व्ययों की कटौती की गई है। दावा किए गए समायोजनों में कमीशन, अंतर्देशीय बीमा, अंतर्देशीय भाड़ा, समुद्री भाड़ा, समुद्री बीमा तथा बैंक प्रभार/ब्याज शामिल हैं। सभी समायोजनों के सत्यापन के पश्चात, कारखाना द्वार निवल निर्यात कीमत *** अम.डॉ./कि.ग्रा. निर्धारित की गई है।

ग.10: मै0 हुआलोन कॉर्पोरेशन, मलेशिया हेतु पाटन मार्जिन

23. सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत के बीच उचित तुलना के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने कारखाना द्वार स्तर पर सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत का निर्धारण किया है। सामान्य मूल्य एवं निर्यात कीमत, समान अवधि से संबंधित है। दोनों कीमतें कर मुक्त हैं। अतः प्राधिकारी मानते हैं कि यह तुलना उचित है। ऊपर उल्लिखित पद्धति से निर्धारित सामान्य मूल्य तथा निवल निर्यात कीमत पर विचार करके पाटन मार्जिन का निर्धारण किया गया है जो **** अम.डॉ./मी. टन है और निवल निर्यात कीमत का 5.88% बनता है।

ग.11: मलेशिया के असहयोगी निर्यातकों हेतु पाटन मार्जिन

24. भारत औसत निर्यात कीमत का निर्धारण सहयोगी निर्यातक की संबद्ध वस्तुओं की निम्नतम कीमत पर विचार करके किया गया है। असहयोगी निर्यातकों हेतु पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए, संबद्ध देश हेतु निर्धारित भारत औसत सामान्य मूल्य की तुलना संबद्ध देशों के असहयोगी निर्यातकों हेतु निर्धारित निवल निर्यात कीमतों के साथ की गई है जो समायोजनों के पश्चात *** अम.डॉ./मी. टन अथवा 16.10% बनती है।

	सामान्य मूल्य	निवल निर्यात कीमत	पाटन मार्जिन	पाटन मार्जिन %
मै0 हुआलोन	****	****	****	5.88
मै0 पॉलिसिन्डो	****	****	****	8.77
अन्य निर्यातक मलेशिया	****	****	****	16.10
अन्य निर्यातक इंडोनेशिया	****	****	****	12.12
सभी निर्यातक चीनी ताइपेई	****	****	****	49.71
सभी निर्यातक थाइलैंड	****	****	****	13.75

घ. क्षति एवं कारणात्मक संबंध

25. अनुबंध-II (iii) के अनुसार यदि एक से अधिक देशों से होने वाले उत्पाद के आयातों की पाटनरोधी जांच होती है तो निर्दिष्ट प्राधिकारी यह निर्धारित करने के बाद ही ऐसे आयातों के प्रभाव का संचयी मूल्यांकन करेंगे कि (क) प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में प्रमाणित पाटन का मार्जिन 2% से

अधिक है जो निर्यात कीमत की प्रतिशतता के रूप में व्यक्त है तथा प्रत्येक देश से होने वाले आयात की मात्रा समान वस्तुओं के आयात का 3% है; और (ख) आयात के प्रभाव का संचयी मूल्यांकन आयातित सामान तथा वैसे ही घरेलू सामान के बीच प्रतियोगिता की शर्तों को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त है।

26. प्राधिकारी ने पाया है कि प्रत्येक संबद्ध देश के मामले में पाटन मार्जिन 2% से अधिक है और प्रत्येक देश के आयातों की मात्रा भी 3% से अधिक है।

27. जहां तक आयातित उत्पादों के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों तथा आयातित उत्पादों एवं समान घरेलू उत्पाद के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि:

- (i) संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं का आयात समान टैरिफ वर्गीकरण के तहत किया गया है;
- (ii) आयातित संबद्ध वस्तुएं घरेलू तौर पर उत्पादित पीओवाई के वाणिज्यिक एवं तकनीकी प्रतिस्थापी हैं।
- (iii) संबद्ध वस्तुओं को अंतिम प्रयोक्ताओं एवं अन्य आयातकों द्वारा आयात किया गया है और ये वस्तुएं समान माध्यमों के जरिए देश के वाणिज्य में प्रविष्ट हुई हैं;

28. अतः प्राधिकारी का विचार है कि संबद्ध देशों से किए गए निर्यात एक ही बाजार में प्रतिस्पर्धा करते हैं, क्योंकि वे समान उत्पाद हैं।

29. उपर्युक्त के मद्देनजर, प्राधिकारी आयातित उत्पादों एवं समान घरेलू उत्पाद के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थिति के आलोक में घरेलू तौर पर उत्पादित समान वस्तु पर संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के पाटित आयातों के प्रभावों के संचयी मूल्यांकन को उचित मानते हैं। अतः जैसा कि ऊपर विचार किया गया है क्षति एवं कारणात्मक संबंध के विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग पर संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के पाटित आयातों की मात्रा एवं कीमत प्रभावों तथा पाटन की मौजूदगी तथा पाटन एवं क्षति, यदि कोई हो, के बीच कारणात्मक संबंधों की जांच हेतु कीमतों और लाभप्रदता पर उसके प्रभाव की जांच के लिए संबद्ध देशों से पाटित आयातों को संचित किया गया है। नियमों में घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले सभी संगत आर्थिक कारकों तथा सूचकों के मूल्यांकन के आधार पर घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच हेतु प्रावधान है। इस जांच के प्रयोजनार्थ, याचिकाकर्ता नियमावली के नियम 2(ख) के तहत परिभाषित शब्द के अर्थों के भीतर घरेलू उद्योग हैं।

30. घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि आधार वर्ष अप्रैल 01-मार्च, 02 की तुलना में जांच अवधि के दौरान चीन से आयातों का हिस्सा न केवल कुल आयातों के मामले में बल्कि कुल मांग एवं कुल उत्पादन की तुलना में भी कई गुणा बढ़ गया है। यह अनुरोध किया गया था कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों ने घरेलू कीमतों पर प्रभाव डाला है और जांच अवधि के दौरान कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री काफी अधिक थी। घरेलू उद्योग ने आरोप लगाया है कि क्षति जांच अवधि के दौरान बाजार हिस्से, क्षमता उपयोग, लाभप्रदता, निवेश पर आय, नकद प्रवाह, वृद्धि इत्यादि में गिरावट आई है। घरेलू उद्योग की बिक्री में वृद्धि हुई है तथापि बिक्री में वृद्धि, मांग में वृद्धि से कम है। इसके अलावा, घरेलू

उद्योग ने आरोप लगाया है कि संबद्ध देशों से पाटन का मार्जिन भी जांच अवधि के दौरान अत्यधिक रहा है जिससे यह प्रदर्शित होता है कि घरेलू उद्योग को संबद्ध वस्तुओं को बेचने में कठिनाई हो रही है।

31. दूसरी ओर आयातकों एवं प्रयोक्ता एसोसिएशनों ने निवेदन किया है कि अन्य देशों के लिए पीओवाई की कीमतों में भी गिरावट आई है और घरेलू उत्पादन की तुलना में वर्ष 2001-2002 से ही पीओवाई की मांग उच्च बनी हुई है और घरेलू उद्योग को माल रोक कर अपर्याप्तता की स्थिति बनाए रखने से अत्यधिक लाभ हुआ है। यह भी निवेदन किया गया है कि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट मामूली है और मांग में वृद्धि के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में वृद्धि हुई है। इसके अलावा, यह भी निवेदन किया गया था कि रोजगार एवं वेतन के संबंध में कोई क्षति नहीं है और घरेलू उत्पादकों के तुलन पत्रों के अनुसार उन्हें हानि नहीं हो रही है और अधिकांश कम्पनियां लाभ अर्जित करने वाली कम्पनियां हैं।

32. आयातकों एवं प्रयोक्ता एसोसिएशनों ने यह भी निवेदन किया है कि जांच अवधि के दौरान याचिकाकर्ताओं की वस्तुसूचियां वस्तुतः पूर्ववर्ती वर्षों की तुलना में कम थीं। इसके अलावा संबद्ध देशों की तुलना में, जहां कच्ची सामग्री की कीमतें अधिक और पीओवाई की कीमतें कम हैं, वहीं भारत में कच्ची सामग्री की कीमतें कम तथा पीओवाई की कीमतें अधिक हैं। यह भी कहा गया था कि लगभग सभी कम्पनियां अपनी क्षमताओं में वृद्धि कर रही हैं जिससे यह संकेत मिलता है कि पीओवाई के आयात से घरेलू उद्योग पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है।

प्रकटन विवरण के संबंध में की गई टिप्पणियों में मै0 ऑल इंडिया टेक्सचराइजर्स एसोसिएशन ने कहा है कि कुल आयातों के हिस्से के रूप में तथा कुल घरेलू उत्पादन के हिस्से के रूप में भी आयातों की मात्रा में जांच अवधि के दौरान गिरावट आई है। घरेलू समेकित इकाइयों की कीमत के संबंध में कीमत कटौती का विश्लेषण किया जाना है। बिक्री कीमत में वृद्धि, पहुँच मूल्यों में वृद्धि से अधिक है।

प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्णायक समीक्षा के मामले में आयातों में गिरावट अथवा नगण्य आयात अथवा किसी विशेष क्षति कारक में सुधार अपने आप में संगत नहीं है क्योंकि क्षति विश्लेषण का आकलन पहले से मौजूद शुल्कों के स्तर के संदर्भ में किया जाना है। यह भी नोट किया गया है कि निर्णायक समीक्षा जांच के मामले में मुख्यतः घरेलू उद्योग को क्षति के जारी रहने अथवा इसकी पुनरावृत्ति के विश्लेषण पर बल दिया जाता है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

33. पाटनरोधी अधिनियम के अनुच्छेद 3:1 और पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II में (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान उत्पादों के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों का प्रभाव, और (ख) पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव के संबंध में ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों का अनुवर्ती प्रभाव दोनों की वस्तुपरक जांच का प्रावधान है। प्राधिकारी द्वारा यह जांच किया जाना अपेक्षित है कि क्या आयातों में सापेक्ष रूप से या उत्पादन अथवा आयातक सदस्य में खपत की तुलना में अत्यधिक वृद्धि हुई है। पाटित आयातों के कीमत प्रभाव के संबंध में प्राधिकारी द्वारा यह जांच किया जाना अपेक्षित है कि क्या आयातक देश में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा

अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा अत्यधिक मात्रा में कीमतों में अवमूल्यन या कीमत वृद्धि जो कि अन्यथा काफी अधिक हुई होती, को रोकने के रूप में हुआ है।

34. प्राधिकारी ने क्षति जांच के पहलुओं पर हितबद्ध पक्षकारों के तर्कों को नोट किया है तथा प्रकटन विवरण में उपयुक्त अवसरों पर उठाए गए मुद्दों का उस सीमा तक समाधान किया है जहां तक इन तर्कों को जांच में प्रासंगिक माना गया है। प्राधिकारी ने उसके समक्ष उपलब्ध तथ्यों तथा हितबद्ध पक्षकारों के तर्कों पर गौर करते हुए क्षति संबंधी मानदण्डों की वस्तुनिष्ठ रूप से जांच की है।

35. प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने रिलायंस इंडस्ट्रीज बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी में माना था कि प्राधिकारी द्वारा 'समग्र रूप से घरेलू उद्योग के लिए' न कि किसी विशेष कम्पनी या उद्यम के संबंध में क्षति तथा एनआईपी का निर्धारण करना अपेक्षित है। इसलिए उपर्युक्त आदेशों के अनुपालन में प्राधिकारी ने सभी अन्य ज्ञात घरेलू उत्पादकों से लागत तथा क्षति संबंधी सूचना मंगवाई थी। तथापि, इन उत्पादकों ने उक्त निर्णय की उनकी व्याख्या के आधार पर उपर्युक्त विषय पर कोई सूचना प्रदान करने से मना कर दिया है। अन्य ज्ञात उत्पादकों द्वारा यह तर्क दिया गया है कि माननीय न्यायालय का उक्त निर्णय एनआईपी तथा क्षति संबंधी निर्धारण में सभी घरेलू उत्पादकों के अंतर्विष्ट होने की अपेक्षा नहीं करता। इसके अलावा, अन्य घरेलू उत्पादकों ने तर्क दिया है कि माननीय सुप्रीम कोर्ट द्वारा अपने निर्णय में प्रयुक्त 'समग्र रूप से घरेलू उद्योग' शब्दों का निर्दिष्ट प्राधिकारी 'समग्र रूप से घरेलू उत्पादक' के रूप में अर्थ लगा रहे हैं। इस संबंध में, यह प्रस्तुत किया गया है कि माननीय न्यायालय ने उस निर्णय में यह माना है कि क्षति तथा साथ ही साथ एनआईपी का 'समग्र रूप से घरेलू उद्योग' के लिए निर्धारण किया जाना है न कि किसी विशेष कम्पनी या उद्यम के संबंध में। इसी पैराग्राफ में, माननीय सुप्रीम कोर्ट ने नियम 2(ख) के तहत घरेलू उद्योग की परिभाषा का संदर्भ दिया है। समूची बहस के दौरान, सुप्रीम कोर्ट ने 'समग्र रूप से घरेलू उद्योग', न कि 'समग्र रूप से घरेलू उत्पादक' शब्दों का उपयोग किया है। इसके अलावा, सुप्रीम कोर्ट ने किसी भी स्तर पर 'घरेलू उद्योग' संज्ञा की नियम 2(ख) में दी गई परिभाषा से भिन्न किसी रूप में व्याख्या नहीं की है। दूसरी ओर, जैसा कि पहले कहा जा चुका है, न्यायालय ने इसी पैराग्राफ में 'घरेलू उद्योग' की परिभाषा का स्पष्ट रूप से संदर्भ दिया है।

36. प्राधिकारी नोट करते हैं कि माननीय कोर्ट के निर्णय की उपर्युक्त व्याख्या उक्त निर्णय के अनुपालन में नहीं हो सकती है क्योंकि प्राधिकारी द्वारा दायर समीक्षा संबंधी आवेदन को माननीय न्यायालय द्वारा खारिज किया गया है। अतः प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तु के सभी घरेलू उत्पादकों, जहां तक वे युक्तिसंगत ढंग से उपलब्ध थे, को शामिल करते हुए घरेलू उद्योग के लिए समग्र रूप से क्षति और एनआईपी का निर्धारण किया है। यह नोट किया जाता है कि मै. रिलायंस इंडस्ट्रीज लि. के अलावा अनेक अन्य काफी छोटे घरेलू उत्पादक हैं जो भारत में संबद्ध वस्तु के एक प्रमुख उत्पादक हैं तथा कुल घरेलू उत्पादन में जिनका हिस्सा लगभग 33% है। प्राधिकारी ने प्रमुख उत्पादक मै. रिलायंस इंडस्ट्रीज लि. की लागत एवं क्षति संबंधी सूचना की जांच कंपनी कार्य मंत्रालय की लागत लेखा परीक्षा शाखा के पास यथाउपलब्ध उसकी लागत लेखा परीक्षा रिपोर्टों के आधार पर की है। अन्य अत्यंत लघु घरेलू उत्पादकों के लिए लागत एवं क्षति संबंधी सूचना लागत लेखा परीक्षा रिपोर्टों के रूप में या किसी अन्य रूप में उपलब्ध नहीं है। यह भी नोट किया जाता है कि इन अन्य अत्यंत लघु उत्पादकों का समग्र रूप

से कुल घरेलू उत्पादन में हिस्सा 14% बनता है। अतः इन अत्यंत लघु उत्पादकों का कोई खास प्रभाव नहीं पड़ेगा। तदनुसार, क्षति की जांच भारत के कुल घरेलू उत्पादन में लगभग 86% हिस्सा रखने वाले संबद्ध वस्तु के 11 ज्ञात उत्पादकों के संबंध में प्राप्त सूचना को ध्यान में रखकर की गई है। यह भी नोट किया जाता है कि प्रत्येक क्षति संबंधी मापदंड के संबंध में 'समग्र रूप से घरेलू उद्योग' में मै. रिलायंस इंडस्ट्रीज लि. (जिनका कुल हिस्सा 86% है और जिसमें मै0 आरआईएल का 33% हिस्सा शामिल है) की सूचना शामिल है लेकिन भारत में सभी उत्पादकों की सूचना शामिल नहीं है। 'घरेलू उद्योग' संज्ञा में केवल आवेदक उत्पादक (जिनके पास 52% हिस्सा है) शामिल हैं। समग्र रूप से घरेलू उद्योग के लिए क्षति संबंधी मापदंडों हेतु क्षति विश्लेषण नहीं किया जा सकता था क्योंकि प्राधिकारी के पास कुछेक क्षति संबंधी मापदंडों हेतु अपेक्षित सूचना नहीं थी, जिसे अगले पैराग्राफों में प्रत्येक कारक हेतु क्षति विश्लेषण करते समय स्पष्ट रूप से इंगित किया गया है।

37. नियमावली के तहत यथापरिकल्पित क्षति संबंधी मापदंडों का निम्नांकित पैराग्राफों में विश्लेषण किया गया है :-

आयातों की मात्रा

(i) प्राधिकारी ने डीजीसीआई एण्ड एस द्वारा प्रकाशित आधिकारिक आंकड़ों में यथा प्रदर्शित संबद्ध वस्तु के आयातों के आधार पर संबद्ध देश से आयातों की मात्रा की जांच की है। जैसाकि पहले उल्लेख किया गया है, प्राधिकारी ने संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों के सौदावार. विश्लेषण की पुनः जांच की है और पुनः जांच के आधार पर संबद्ध वस्तु के आयातों की मात्रा एवं मूल्य के आंकड़ों को संशोधित किया गया है। यह देखा गया है कि कुल आयातों में संबद्ध देश का हिस्सा, आधार वर्ष में किए गए आयात की तुलना में घटकर जांच अवधि के दौरान 11% हो गया है।

	अप्रैल 01 से मार्च 02	अप्रैल 02 से मार्च 03	अप्रैल 03 से मार्च 04	जांच अवधि (वार्षिक)
संबद्ध देशों से आयात (मी. टन)	33256	41046	15891	3856
अन्य देशों जिन पर पाटनरोधी शुल्क लग रहा है, से आयात	1461	1455	8693	32132
अन्य बचे देशों से आयात	4797	2886	2253	1413
कुल आयात (मी. टन)	39514	45387	26837	37401

	अप्रैल 01 से मार्च 02	अप्रैल 02 से मार्च 03	अप्रैल 03 से मार्च 04	जांच अवधि (वार्षिक)
संबद्ध देशों से आयात (मी. टन)	100	123.43	47.78	11.59

अन्य देशों जिन पर पाटनरोधी शुल्क लग रहा है, से आयात	100	99.59	595.00	2199.32
अन्य बचे देशों से, आयात	100	60.17	46.97	29.46
कुल आयात (मी. टन)	100	114.86	67.92	94.85

कुल आयात एवं माँग में संबद्ध देशों से हुए आयातों का बाजार हिस्सा

(ii) प्राधिकारी पाते हैं कि भारत में कुल माँग की तुलना में संबद्ध देश से हुए आयातों में आधार वर्ष के दौरान 5% से ज्यादा के स्तर से 0.50% के स्तर तक गिरावट आई है। वर्ष-दर-वर्ष प्रतिशत वृद्धि की प्रवृत्ति निम्नानुसार तालिका में दी गई है। कुल आयातों में, यह आधार वर्ष में 84% की उच्चता से घटकर जांच अवधि के दौरान 10% हो गया।

कुल माँग	अप्रैल 01 से मार्च 02	अप्रैल 02 से मार्च 03	अप्रैल 03 से मार्च 04	जांच अवधि (वार्षिक)
कुल माँग (मी. टन)	646810	683470	708597	766477
प्रवृत्ति	100	106	110	119

आयातों का हिस्सा

	अप्रैल 01 से मार्च 02	अप्रैल 02 से मार्च 03	अप्रैल 03 से मार्च 04	जांच अवधि (वार्षिक)
संबद्ध देशों से आयात (मी. टन)				
इंडोनेशिया	13421	24075	2812	228
मलेशिया	4456	3220	4922	821
चीनी ताइपेई	9995	9719	5261	691
थाईलैंड	5383	4032	2896	2116
कुल संबद्ध देश	33256	41046	15891	3856
अन्य देशों जिन पर पाटनरोधी शुल्क लग रहा है से आयात	1461	1455	8693	32132
अन्य शेष बचे देशों से आयात	4797	2886	2253	1413
कुल आयात (मी. टन)	39514	45387	26837	37401
कुल घरेलू बिक्री	607296	638083	681760	728076

कुल माँग (मी. टन)	646810	683470	708597	766477
संबद्ध देशों से आयातों का % हिस्सा				
कुल आयात	84%	90%	59%	10%
कुल माँग (मी. टन)	5.14%	6.01%	2.24%	0.50%
अन्य देशों जिन पर पाटनरोधी शुल्क लग रहा है, से आयातों का % हिस्सा				
कुल आयात	3.70%	3.21%	32.39%	85.91%
कुल माँग (मी. टन)	0.23%	0.21%	1.23%	4.19%
अन्य शेष बचे देशों से आयातों का % हिस्सा				
कुल आयात	12.14%	6.36%	8.40%	3.78%
कुल माँग (मी. टन)	0.74%	0.42%	0.32%	0.18%

घरेलू उत्पादन के % के रूप में संबद्ध देश से आयात

(iii) प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उत्पादकों के घरेलू उत्पादन के प्रतिशत के रूप में संबद्ध देशों से पाटित आयात 2001-2002 में 4.24% के स्तर से गिरकर जांच अवधि के दौरान 0.41% हो गए।

आयातों का हिस्सा

	अप्रैल 01 से मार्च 02	अप्रैल 02 से मार्च 03	अप्रैल 03 से मार्च 04	जांच अवधि (वार्षिक)
संबद्ध देशों से आयात (मी. टन)				
इंडोनेशिया	13421	24075	2812	228
मलेशिया	4456	3220	4822	821
चीनी ताइपेई	9995	9719	5261	691
थाइलैंड	5383	4032	2896	2116
कुल संबद्ध देश	33256	41046	15891	3856
अन्य देशों जिन पर पाटनरोधी शुल्क लग रहा है, से आयात	1461	1455	8693	32132
अन्य शेष बचे देशों से आयात	4797	2886	2253	1413
कुल आयात (मी. टन)	39514	45387	26837	37401
कुल घरेलू विक्री	607296	638083	681760	729076
कुल माँग (मी. टन)	646810	683470	708597	766477
कुल घरेलू उत्पादन	784460	840065	900245	936775
संबद्ध देशों से आयातों का % हिस्सा				
कुल घरेलू उत्पादन	4.24%	4.89%	1.77%	0.41%
अन्य देशों जिन पर पाटनरोधी शुल्क लग रहा है, से आयातों का % हिस्सा				
कुल घरेलू उत्पादन	0.19%	0.17%	0.97%	3.43%
अन्य शेष बचे देशों से आयातों का % हिस्सा				
कुल घरेलू उत्पादन	0.61%	0.34%	0.25%	0.15%

समान उत्पादों के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव

कीमत कटौती

(iv) घरेलू कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में इस बात की जांच की गई है कि क्या पाटित आयातों के कारण भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में भारी कीमत कटौती की गई है या क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों में महत्वपूर्ण स्तर तक कमी करना था या ऐसी कीमत वृद्धि को रोकना था जो अन्यथा महत्वपूर्ण स्तर तक बढ़ गई होती। संबंधित उत्पाद के लिए व्यापार के समान स्तर पर असंबंधित उपभोक्ताओं को की गई बिक्रियों हेतु सभी छूटों और करों के निवल मूल्य पर निर्यातित उत्पाद के पहुँच मूल्य और घरेलू बाजार हेतु घरेलू उद्योग के औसत बिक्री मूल्य की तुलना की गई है। घरेलू उद्योग की कीमतों का निर्धारण कारखाना द्वार स्तर पर किया गया है। संबंधित संबद्ध देश की सीआईएफ कीमतों को आयात के बाद लागू शुल्कों सहित समायोजित किया गया था। इस तुलना से पता चला है कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश में उद्भूत संबद्ध वस्तुओं को भारतीय बाजार में ऐसी कीमतों पर बेचा गया था जिनसे घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती होती है जब उन्हें घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री कीमत के प्रतिशत के रूप में व्यक्त किया जाता है जैसाकि निम्नांकित तालिका से स्पष्ट है।

घरेलू बाजार में आयातों के प्रभाव का आकलन करने के लिए क्षति अवधि के दौरान आयात कीमतों का विश्लेषण किया गया है। यह नोट किया गया था कि संबद्ध देश से निर्यातकों ने अपनी कीमतें घटा दी थी और क्षति अवधि के दौरान पहुँच मूल्य में 16% की कमी हुई है जबकि घरेलू बिक्री कीमत में इस अवधि के दौरान 30% तक की वृद्धि भी हुई है। अतः क्षति अवधि के दौरान कीमत कटौती में भारी वृद्धि हुई है और थाइलैंड को छोड़कर जिसने नकारात्मक कीमत कटौती प्रदर्शित की है यह जांच अवधि के दौरान भी अधिक बनी रही है।

कीमत कटौती

	अप्रैल 01 से मार्च 02	अप्रैल 02 से मार्च 03	अप्रैल 03 से मार्च 04	जांच अवधि (वार्षिक)
बिक्री कीमत रु./मी.टन-समग्र रूप से घरेलू उद्योग	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	112	120	130
पहुँच मूल्य रु./मी.टन				
इंडोनेशिया	46829	61182	62986	59588
मलेशिया	71756	74040	61709	63434
चीनी ताइपेई	61116	59130	55451	54905

282167/07-3

थाइलैंड	62111	59356	62254	71886
संबद्ध देश	56937	61525	59962	66317
सूचीबद्ध	100	108	105	116
कीमत कटौती रु./मी.टन				
इंडोनेशिया	*****	*****	*****	*****
मलेशिया	*****	*****	*****	*****
चीनी ताइपेई	*****	*****	*****	*****
थाइलैंड	*****	*****	*****	*****
संबद्ध देश	*****	*****	*****	*****
कीमत कटौती %				
इंडोनेशिया	*****	*****	*****	*****
मलेशिया	*****	*****	*****	*****
चीनी ताइपेई	*****	*****	*****	*****
थाइलैंड	*****	*****	*****	*****
संबद्ध देश	*****	*****	*****	*****
कीमत कटौती (%) सीमा				
इंडोनेशिया	17% to 1%	-8 to 5%	1% to 8%	8% to 20%
मलेशिया	-50% to -15%	-40 to -10%	1% to 11%	5% to 14%
चीनी ताइपेई	-25% to -5%	-10 to 1%	8% to 20%	15% to 28%
थाइलैंड	-26% to -6%	-12 to 1%	1% to 10%	-8% to 5%
संबद्ध देश	-12% to 1%	-8 to 5%	1% to 15%	4% to 16%

मै0 आल इंडिया टेक्सचराईजर्स एसोसिएशन ने भी दिनांक 3 अगस्त, 2006 की अपील सं0 सी-848-849/05-एडी में सीईएसटीएटी के निर्णय को उद्धृत करते हुए यह बताया है कि कीमत कटौती जिसके कारण क्षति हो रही है, का मुद्दा अर्थहीन है यदि पाटित आयातों की मात्रा, घरेलू उत्पादन और घरेलू खपत की तुलना में अपर्याप्त है।

प्राधिकारी नोट करते हैं कि माननीय सीईएसटीएटी द्वारा एक्रीलिक फाइबर विनिर्माताओं बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी 2006 (202) ईएलटी 257 के फोरम में उपर्युक्त उल्लिखित निर्णय मध्यावधि समीक्षा

जांच में दिया गया है। तथापि यह नोट किया जाता है कि निर्णायक समीक्षा जांच में क्षति का जारी रहना अथवा इसकी आवृत्ति होने की "संभावना" बननी होती है तथा क्षति विश्लेषण को क्षति के जारी रहने अथवा इसकी आवृत्ति होने के रूप में घरेलू उद्योग के भविष्य अथवा संभावित स्थिति पर केन्द्रित होना होता है, बशर्ते शुल्कों को समाप्त करने की अनुमति दी जाती हो।

कीमत ह्रास एवं न्यूनीकरण

(v) क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में कोई गिरावट नहीं आई है। अतः घरेलू उद्योग की कीमतों में कोई ह्रास नहीं हुआ है। तथापि, यह देखा गया है कि संबद्ध देश से पहुँच कीमत में, घरेलू उद्योग की संबद्ध वस्तु के उत्पादन की लागत की तुलना में समानुपातिक रूप से वृद्धि नहीं हुई है जिसका यह अर्थ है कि संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को कीमत न्यूनीकरण का सामना करना पड़ा है।

	अप्रैल 01 से मार्च 02	अप्रैल 02 से मार्च 03	अप्रैल 03 से मार्च 04	जांच अवधि (वार्षिक)
उत्पादन की लागत रु./मी.टन-समग्र रूप से घरेलू उद्योग	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	108	104	132
वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि		****	****	****
सूचीबद्ध		100	-58	591
बिक्री कीमत रु./मी.टन-समग्र रूप से घरेलू उद्योग	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	112	120	130
वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि		****	****	****
सूचीबद्ध		100	76	112
संबद्ध देशों से पहुँच मूल्य रु./मी.टन				
इंडोनेशिया	46829	61182	62986	59588
मलेशिया	71756	74040	61709	63434
चीनी ताइपेई	61116	59130	55451	54905
थाईलैंड	62111	59356	62254	71886
कुल घरेलू देश	56937	61525	59962	66317
सूचीबद्ध	100	108	105	116

कम कीमत पर बिक्री

(vi) प्राधिकारी ने याचिकाकर्ता के इस दावे की जांच भी की है कि घरेलू उद्योग संबद्ध वस्तु की बिक्री से कम कीमत पर बिक्री के कारण हानि उठा रहा है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि कम कीमत पर बिक्री, क्षति का आकलन करने के लिए एक महत्वपूर्ण संकेतक है। प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद के लिए क्षतिरहित कीमत की गणना की है तथा इसकी कम कीमत पर बिक्री की सीमा ज्ञात करने के लिए पहुँच मूल्य से तुलना की है। विश्लेषण कम कीमत पर बिक्री के अत्यधिक उच्च स्तर की घटना को दर्शाता है जिससे संबद्ध देश से पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है।

कम कीमत पर बिक्री	
	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
क्षतिरहित कीमत रु./मी. टन	****
पहुँच मूल्य रु./मी. टन	
इंडोनेशिया	59588
मलेशिया	63434
चीनी ताइपेई	54905
थाइलैंड	71886
संबद्ध देश	66317
कम कीमत पर बिक्री रु./मी. टन	
इंडोनेशिया	****
मलेशिया	****
चीनी ताइपेई	****
थाइलैंड	****
संबद्ध देश	****
कम कीमत पर बिक्री (%)	
इंडोनेशिया	****
मलेशिया	****
चीनी ताइपेई	****
थाइलैंड	****
संबद्ध देश	****
कम कीमत पर बिक्री (%) - रेंज	
इंडोनेशिया	12% से 30%
मलेशिया	15% से 28%
चीनी ताइपेई	20% से 39%
थाइलैंड	3% से 12%
संबद्ध देश	8% से 22%

घरेलू उद्योग की स्थिति

(vii) भारत में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जांच के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियमावली के अनुबंध II (iv) के अनुसार उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री वसूली, पाटन की मात्रा तथा मार्जिन जैसे संकेतकों जिनसे उद्योग की स्थिति पर प्रभाव पड़ता है, पर गौर किया है। सुप्रीम कोर्ट के निर्णय की तर्ज पर प्राधिकारी ने समग्र रूप से घरेलू उद्योग के लिए क्षति तथा एन आई पी के निर्धारण के लिए आगे कार्रवाई की है ताकि उस सीमा तक जहां तक ऐसा करना प्रासंगिक तथा तार्किक रूप से उपलब्ध हो, संबद्ध वस्तु के सभी घरेलू उत्पादकों को शामिल किया जा सके। यह नोट किया जाता है कि मै0 रिलायंस इंडस्ट्रीज लि0 जो कुल घरेलू उत्पादन में लगभग 33 प्रतिशत हिस्से के साथ भारत में संबद्ध वस्तु के प्रमुख उत्पादकों में से एक है, से पृथक अनेक बहुत छोटे

घरेलू उत्पादक हैं। प्राधिकारी ने प्रमुख उत्पादक मै0 रिलायंस इंडस्ट्रीज लि0 की लागत एवं क्षति की जांच, कंपनी मामले मंत्रालय की लागत लेखा परीक्षा शाखा के पास उपलब्ध इसकी लागत लेखा परीक्षा रिपोर्टों से की है। अन्य बहुत छोटे घरेलू उत्पादकों के लिए लागत एवं क्षति जांच संबंधी सूचना, लागत लेखा परीक्षा रिपोर्टों के रूप में अथवा अन्य किसी रूप में उपलब्ध नहीं है। यह भी नोट किया जाता है कि ये अन्य अति लघु उत्पादक समग्र रूप से कुल घरेलू उत्पादन का 14 प्रतिशत हिस्सा बनाते हैं। इसलिए, इन अति लघु उत्पादकों का प्रभाव उल्लेखनीय नहीं होगा। तदनुसार, भारत में संबद्ध वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का लगभग 86 प्रतिशत हिस्सा बनाने वाले 11 ज्ञात उत्पादकों से संबंधित जानकारी के आधार पर क्षति जांच की गई है। यह भी नोट किया जाता है कि क्षति संबंधी मापदण्डों में से प्रत्येक के संबंध में समग्र रूप से घरेलू उद्योग में मै0 रिलायंस इंडस्ट्रीज लि0 की जानकारी शामिल है किन्तु भारत में सभी उत्पादकों की जानकारी शामिल नहीं है। "घरेलू उद्योग" प्रत्यय में केवल याचिकाकर्ता उत्पादक शामिल है। समग्र रूप से घरेलू उद्योग हेतु क्षति संबंधी सभी मापदण्डों के लिए क्षति विश्लेषण नहीं किया जा सका क्योंकि क्षति संबंधी मापदण्डों से कुछेक के लिए अपेक्षित सूचना प्राधिकारी के पास उपलब्ध नहीं थी जिसे प्रत्येक कारक के लिए क्षति विश्लेषण करते समय स्पष्ट रूप से निम्नलिखित पैराग्राफों में स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है।

बिक्री और घरेलू उत्पादक का बाजार हिस्सा

(viii) यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग तथा समग्र रूप से घरेलू उद्योग की बिक्री में वृद्धि हुई है तथा यह वृद्धि मांग में वृद्धि के अनुरूप हुई है। इसके अलावा, प्राधिकारी पाते हैं कि घरेलू उद्योग तथा भारत में संबद्ध वस्तु की मांग में संबद्ध देशों से आयात का बाजार हिस्सा निम्नानुसार रहा है:-

बिक्री (मी.टन)	अप्रैल 01 से मार्च 02	अप्रैल 02 से मार्च 03	अप्रैल 03 से मार्च 04	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
घरेलू उद्योग	307826	310022	324328	392195
अन्य घरेलू उत्पादक	202429	175147	234039	231456
समग्र रूप से घरेलू उद्योग	510255	485169	558367	623651

घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा

	अप्रैल 01 से मार्च 02	अप्रैल 02 से मार्च 03	अप्रैल 03 से मार्च 04	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
बिक्री (मी.टन)				
घरेलू उद्योग	307826	310022	324328	392195
अन्य घरेलू उत्पादक	202429	175147	234039	231456
समग्र रूप से घरेलू उद्योग	510255	485169	558367	623651
कुल मांग (मी.टन)	646810	683470	708597	766477
बाजार हिस्सा:				

घरेलू उद्योग का (%)	48	45	46	51
अन्य घरेलू उत्पादकों का (%)	31	26	33	30
समग्र रूप से घरेलू उद्योग का (%)	79	71	79	81

प्राधिकारी पाते हैं कि घरेलू उत्पादक का हिस्सा 2001-02 के दौरान 48 प्रतिशत से मामूली रूप से बढ़कर जाँच अवधि के दौरान 51 प्रतिशत हो गया जबकि समग्र रूप से घरेलू उद्योग के हिस्से में इसी अवधि के दौरान 2 प्रतिशत बिंदुओं की वृद्धि हुई। यह भी नोट किया जाता है कि इसी अवधि के दौरान मांग में 18 प्रतिशत की वृद्धि हुई। यह दर्शाता है कि घरेलू उद्योग क्षति अवधि के दौरान भले ही मामूली रूप से, वृद्धि प्राप्त करने में समर्थ था। अतः यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से पर प्रतिकूल असर नहीं पड़ा है।

उत्पादन तथा क्षमता उपयोग

उत्पादन (मी.टन)

उत्पादन (मी.टन)	अप्रैल 01 से मार्च 02	अप्रैल 02 से मार्च 03	अप्रैल 03 से मार्च 04	जाँच अवधि (वार्षिकीकृत)
घरेलू उद्योग	385167	402651	423669	484734
अन्य घरेलू उत्पादक	269188	247679	255620	252412
समग्र रूप से घरेलू उद्योग	654355	650330	679289	737146

क्षमता (मी.टन)

क्षमता (मी.टन)	अप्रैल 01 से मार्च 02	अप्रैल 02 से मार्च 03	अप्रैल 03 से मार्च 04	जाँच अवधि (वार्षिकीकृत)
घरेलू उद्योग	389425	428175	478196	513208
अन्य घरेलू उत्पादक	267174	275274	268450	261979
समग्र रूप से घरेलू उद्योग	656599	703449	746646	775188

क्षमता उपयोग %

क्षमता उपयोग %	अप्रैल 01 से मार्च 02	अप्रैल 02 से मार्च 03	अप्रैल 03 से मार्च 04	जाँच अवधि (वार्षिकीकृत)
घरेलू उद्योग	98.91%	94.04%	88.60%	94.45%
अन्य घरेलू उत्पादक	100.75%	89.98%	95.22%	96.35%
समग्र रूप से घरेलू उद्योग	99.66%	92.45%	90.98%	95.09%

(ix) प्राधिकारी पाते हैं कि घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में वर्ष 2001-02 में 98.91 प्रतिशत से जांच अवधि के दौरान 94.45 प्रतिशत तक की गिरावट आई। अतः क्षमता उपयोग में गिरावट तथा दूसरी ओर क्षति जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश से पाटित आयातों में वृद्धि से घरेलू उद्योग प्रतिकूलतः प्रभावित प्रतीत होता है।

माल सूची:

(x) प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग की माल सूची का स्तर जांच अवधि के दौरान घट गया जबकि बिक्री के प्रतिशत के रूप में माल सूची में क्षति अवधि के दौरान उल्लेखनीय गिरावट आई।

मालसूची	अप्रैल 01 से मार्च 02	अप्रैल 02 से मार्च 03	अप्रैल 03 से मार्च 04	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
बिक्री (मी. टन) - घरेलू उद्योग	307826	310022	324328	392195
मालसूची - घरेलू उद्योग	29632	29605	21878	6887
बिक्री के प्रतिशत के रूप में मालसूची	9.63%	9.55%	6.75%	1.76%
सूचीबद्ध	100	99	70	18

घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक:

(xi) प्राधिकारी नोट करते हैं कि थाइलैंड और दो सहयोगी निर्यातकों, इंडोनेशिया और मलेशिया प्रत्येक से एक-एक को छोड़कर प्रत्येक संबद्ध देश से कीमत कटौती संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण अत्यधिक है। तथापि, प्रत्येक संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण और संचयी रूप से कम कीमत पर बिक्री बहुत अधिक है क्योंकि प्रत्येक संबद्ध देश से आयातों का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत से बहुत कम है। यद्यपि संबद्ध देशों से आयातों का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत से बहुत कम है। यद्यपि संबद्ध देशों से आयातों का पहुंच मूल्य/मी. टन वर्ष 2001-02 की तुलना में जांच अवधि के दौरान बढ़ा है, लेकिन कच्चे तेल की कीमतों में उछाल के परिणामस्वरूप कच्चे माल की लागत में बहुत अधिक बढ़ोत्तरी हुई है। इससे स्पष्ट रूप से संकेत मिलता है कि घरेलू कीमतों पर पाटित आयातों का प्रभाव आंकड़ों के साधारण विश्लेषण में प्रदर्शित असर से कहीं अधिक है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि आवेदक के अलावा भारत में घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु के कुछ अन्य घरेलू उत्पादक हैं जो कुल उत्पादन के लगभग 48% हिस्सा बनते हैं। तथापि, इन उत्पादकों के आंकड़े (जो कुल उत्पादन के 33% हिस्से को कवर करते हैं जिन पर समग्र रूप से घरेलू उद्योग हेतु मानदंडों का निर्धारण करते समय विचार किया गया है) घरेलू उद्योग की तुलना में लागत तथा कीमत संबंधी उल्लेखनीय अंतर को प्रदर्शित नहीं करते हैं। इसके अलावा, अन्य ज्ञात उत्पादकों (जो घरेलू उत्पादकों के कुल 86% हिस्से को कवर करते हैं) सहित क्षति जांच समग्र रूप से घरेलू उद्योग (उन अधिकांश क्षति मानदंडों को कवर करते हुए जिनकी सूचना एकत्र की जा सकी थी) हेतु भी किया गया है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों का घरेलू उद्योग की कीमतों पर अत्यधिक कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री संबंधी प्रभाव (संचयी) पाया

गया है। जहां तक घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों का संबंध है, यह नोट किया जाता है कि इनमें जांच अवधि के दौरान आधार वर्ष की तुलना में बढ़ोत्तरी हुई है। अतः घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाला प्रमुख कारक संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं की पाटित कीमतें प्रतीत होती हैं।

पाटन के मार्जिन का परिमाण:

(xii) प्राधिकारी पाते हैं कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के लिए पाटन के मार्जिन का परिणाम उल्लेखनीय है।

रोजगार, मजदूरी तथा उत्पादकता:

(xiii) प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने अतिरिक्त क्षमताएं जोड़ी हैं तथा अनेक व्यक्तियों को रोजगार प्रदान किया है। तदनुसार, कर्मचारियों की संख्या तथा उन्हें प्रदान की गई मजदूरी में क्षति जांच अवधि में वृद्धि हुई है। प्राधिकारी पाते हैं कि जांच अवधि के दौरान प्रति कर्मचारी उत्पादकता में आधार वर्ष 2001-02 की तुलना में वृद्धि हुई है। अतः यह नोट किया जाता है कि उत्पादकता में कमी घरेलू उद्योग को हुई क्षति का एक कारण नहीं है।

कर्मचारी, मजदूरी तथा उत्पादकता

	अप्रैल 01 से मार्च 02	अप्रैल 02 से मार्च 03	अप्रैल 03 से मार्च 04	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
कर्मचारी (सं०) घरेलू उद्योग	3254	3398	3434	3758
मजदूरी (लाख रु.) घरेलू उद्योग	3413	3521	3825	4495
घरेलू उद्योग का उत्पादन	385167	402651	423669	484734
उत्पादकता प्रतिकर्मचारी/मी.टन	118	118	123	129

लाभप्रदता

(xiv) प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग जांच अवधि के दौरान लाभ कमाने में असमर्थ रहा है। घरेलू उद्योग ने वर्ष 2001-02 में 1.30 प्रतिशत के लाभ स्तर को छुआ जो कि जांच अवधि के दौरान नकारात्मक स्तर (0.99 प्रतिशत) तक गिर गया जिसे निम्नानुसार तालिका में देखा जा सकता है:-

लाभ/हानि (लाख रु.)				
घरेलू उद्योग	****	****	****	****
अन्य घरेलू उत्पादक	****	****	****	****
समग्र रूप से घरेलू उद्योग	****	****	****	****
घरेलू उद्योग	100	261	603	-103
अन्य घरेलू उत्पादक	-100	-66	198	-62

समग्र रूप से घरेलू उद्योग	-100	-27	359	-96
लाभ/हानि (%):				
घरेलू उद्योग	****	****	****	****
अन्य घरेलू उत्पादक	****	****	****	****
समग्र रूप से घरेलू उद्योग	****	****	****	****

निवेश (लगाई गई पूंजी) पर आय

(xv) प्राधिकारी नोट करते हैं कि लगाई गई पूंजी पर आय में भी गिरावट आई है और इसमें भी लाभप्रदता जैसी ही प्रवृत्ति देखने को मिली। घरेलू उद्योग जांच अवधि के दौरान अपने निवेश पर *** % आय अर्जित कर सका जबकि पिछले वर्ष 2003-04 में यह *** % आय तथा आधार वर्ष में *** % आय अर्जित कर सका था।

लगाई गई पूंजी पर आय	अप्रैल 01 से मार्च 02	अप्रैल 02 से मार्च 03	अप्रैल 03 से मार्च 04	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
लगाई गई पूंजी (लाख रु.) - घरेलू उद्योग	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	121	102	102
ब्याज पूर्व लाभ/हानि (लाख रु.) - घरेलू उद्योग	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	98	134	25
आर ओ सी ई (%) - घरेलू उद्योग	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	80.94	131.04	18.66

नकदी प्रवाह पर वास्तविक तथा संभावित नकारात्मक प्रभाव

(xvi) प्राधिकारी पाते हैं कि नकद लाभ/नकदी प्रवाह में भी लाभप्रदता जैसी ही प्रवृत्ति देखने में आई है तथा आधार वर्ष 2001-02 की तुलना में जांच अवधि के दौरान इसमें अत्यधिक गिरावट आई है।

नकद लाभ	अप्रैल 01 से मार्च 02	अप्रैल 02 से मार्च 03	अप्रैल 03 से मार्च 04	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
नकद लाभ (लाख रु.) - घरेलू उद्योग	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	138	190	90
नकद लाभ रु./मी. टन- घरेलू उद्योग	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	145	174	74

वृद्धि

(xvii) प्राधिकारी नोट करते हैं कि यद्यपि घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में जांच अवधि के दौरान वृद्धि हुई तथापि जांच अवधि के दौरान बिक्री मात्रा में वृद्धि पिछले वर्ष तथा इसी अवधि में कुल मांग में वृद्धि की तुलना में कम थी। इसके अलावा, घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान गिरावट आई है। यह मालूम होता है कि घरेलू उद्योग के प्रचालनात्मक निष्पादन से संबंधित विभिन्न मानदंडों पर प्रतिकूल असर पड़ा है। वृद्धि संबंधी विभिन्न मानदंड नीचे दिए गए हैं :-

<u>वृद्धि</u>	अप्रैल 01 से मार्च 02	अप्रैल 02 से मार्च 03	अप्रैल 03 से मार्च 04	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
मांग		6	10	19
उत्पादन - समग्र रूप से घरेलू उद्योग		-1	4	9
बाजार हिस्सा - समग्र रूप से घरेलू उद्योग		-10	-0.11	3
बिक्री मात्रा - समग्र रूप से घरेलू उद्योग		-5	15	12
लाभ - समग्र रूप से घरेलू उद्योग		-28	336	-89
नकद प्रवाह/मी.टन - समग्र रूप से घरेलू उद्योग		65	208	-79
आर ओ सी ई - घरेलू उद्योग		-19	62	-86

पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता

(xviii) प्राधिकारी यह पाते हैं कि पी ओ आई के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा विचाराधीन उत्पाद के संबंध में वहन किए गए घाटे के दृष्टिगत जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के नकारात्मक लाभों और घटते हुए लाभों के मद्देनजर घरेलू उद्योग की पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

ड.. कारणात्मक संबंध एवं अन्य कारक**पाटित आयातों का प्रभाव**

38. वर्ष 2001-02 और जांच अवधि के बीच संबद्ध वस्तु के कुल आयात के प्रतिशत के रूप में संबद्ध देश से पाटित आयात घटकर आधार वर्ष में किए गए आयातों का 11% रह गया था। तथापि, कीमत प्रभाव की जांच करते समय अर्थात् कि क्या पाटित आयातों से भारत में संबद्ध वस्तु की कीमत में अत्यधिक कटौती हुई है, प्राधिकारी ने यह पाया कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु का पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से कम था जिससे यह प्रदर्शित होता है कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों से घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत

में अत्यधिक कम हुई है। यह पाया गया है कि कीमत कटौती और आयातों के पहुँच मूल्य के कीमत व्यवहार से घरेलू उद्योग, घरेलू कीमतों को उत्पादन लागत से भी कम अलाभकारी स्तर पर रखने के लिए बाध्य हुआ है। घरेलू उद्योग पाटित आयातों के कारण उत्पादन लागत में पूरी वृद्धि वसूल करने के लिए बिक्री कीमत में वृद्धि नहीं कर सका था और इसे पी ओ आई के दौरान वित्तीय घाटा उठाना पड़ा था। कीमत मंदी के साथ कीमत कटौती के कारण घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में कमी आयी थी। पूर्वोक्त के आधार पर यह माना जाता है कि घरेलू उद्योग को पीओआई के दौरान संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण वास्तविक क्षति हुई थी।

अन्य कारकों का प्रभाव

व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथा और विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा

39. प्राधिकारी ने ऐसी कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथा नहीं पायी है जिसका भारतीय उत्पादकों और अन्य प्रतिस्पर्धी उद्योगों द्वारा अनुसरण किया गया हो। जहां तक घरेलू मांग और उनके अपने उत्पादन के बीच अंतर को पाटने की घरेलू उद्योग की असमर्थता का संबंध है, यह देखा गया है कि पाटनरोधी शुल्क लगाना घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की आपूर्ति हेतु आपूर्तिकर्ताओं और उत्पादकों पर कोई प्रतिबंध लगाने के समान नहीं है, जिससे घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति में योगदान मिलेगा। इसके अलावा, यह भी नोट किया जाता है कि यदि बाजार में प्रतिस्पर्धा उचित कीमत पर होती है तो स्थानीय मांग को पूरा करने के लिए घरेलू उद्योग के पास अप्रयुक्त क्षमता है।

मांग में संकुचन और खपत की पद्धति में परिवर्तन

40. यह नोट किया जाता है कि विचाराधीन अवधि में मांग में कोई कमी नहीं हुई है। इसके विपरीत पी ओ आई में समग्र मांग में वृद्धि हुई है। इसलिए मांग में संभावित कमी ऐसा कारक नहीं है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हुई होगी।

प्रौद्योगिकी

41. किसी भी हितबद्ध पक्षकार द्वारा इस बात का कोई भी साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया है कि प्रौद्योगिकी घरेलू उद्योग को हुई क्षति का एक कारक है।

निर्यात निष्पादन

42. घरेलू उद्योग ने जांच अवधि के साथ-साथ उसके पूर्व के वर्षों में भी संबद्ध वस्तु का निर्यात किया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के निर्यात निष्पादन में सुधार प्रदर्शित हुआ है। क्षति जांच के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की लाभप्रदता और निर्यात बिक्री को अलग-अलग किया गया है। अतः निर्यात (यदि कोई हो) के कारण हुई क्षति को घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग के निष्पादन का कारण नहीं माना गया है।

उत्पादकता

43. आधार वर्ष 2001-02 की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में सुधार हुआ है। उत्पादकता स्वतः घरेलू उद्योग को क्षति का कारण नहीं हो सकती थी।

अन्य तर्क

44. कुछ हितबद्ध पक्षकारों द्वारा यह निवेदन किया गया है कि देशी उत्पादन की तुलना में पीओवाई की माँग वर्ष 2001-02 से ही अधिक रही है और देशी उद्योग कमी उत्पन्न करने बहुत लाभान्वित हुआ है। प्राधिकारी ने इस वक्तव्य की जांच की और नोट किया है कि एसोसिएशनों ने अपने तर्क के समर्थन में किसी साक्ष्य या अकाट्य कारण के बिना केवल वक्तव्य दिए हैं। उनके अन्य तर्कों कि घरेलू उत्पादकों के तुलन पत्र के अनुसार उन्हें घाटा नहीं हो रहा है और अधिकांश कंपनियाँ लाभ कमाने वाले उद्यम हैं, के संबंध में यह नोट किया गया है कि पाटनरोधी जांच उत्पाद-विशिष्ट होती हैं और कंपनी के तुलन पत्र, जिसमें अन्य उत्पादों की सूचना भी शामिल होती है, पर आधारित कोई निष्कर्ष उचित नहीं है। यह स्थिति पाटनरोधी कानूनों की स्पष्ट भाषा और अपीलीय निकाय के निर्णय से स्पष्ट है। वस्तुतः, प्राधिकारी के अंतिम जांच परिणाम विचाराधीन उत्पाद से संबंधित रिकॉर्डों पर आधारित हैं, जिनका उचित रूप से सत्यापन भी किया गया है। हितबद्ध पक्षकारों के इन निवेदनों के संबंध में कि लगभग सभी कंपनियाँ अपनी क्षमता बढ़ा रही हैं, जिससे यह संकेत मिलता है कि पीओवाई के आयातों ने देशी उद्योग को बिल्कुल प्रभावित नहीं किया गया है, यह नोट किया गया है कि कुछेक आवेदक वास्तव में अपनी क्षमता बढ़ा रहे हैं, एक तथ्य है जिसके बारे में हितबद्ध पक्षकारों ने भी निवेदन किया है। यह भी नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि क्षमता वृद्धि का निर्णय जांच शुरुआत के पूर्व लिया गया था और एक विशिष्ट समय में घरेलू उद्योग को चीन से पाटन के क्षतिकारी प्रभावों का सामना करना पड़ा था। इस मुद्दे की जांच की गई है और यह नोट किया गया है कि बढ़ते हुए बाजार और बड़े पैमाने पर किफायत का फायदा उठाने के लिए क्षमता में वृद्धि की गई है। अतः केवल यह तथ्य कि घरेलू उद्योग के कुछ घटकों ने अपनी क्षमता में वृद्धि की है, से यह निष्कर्ष नहीं निकलता है कि उन्हें संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण क्षति नहीं हो रही होगी। विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों के निवेदनों के संबंध में कि कई वर्षों में पीओआई पर उत्पाद शुल्क में कमी की गई है परन्तु यह लाभ उपभोक्ताओं तक नहीं पहुँचा है, यह नोट किया गया है कि बिक्री कीमत का विश्लेषण हमेशा कारखाना-द्वार स्तर पर किया जाता है। कारखाना-द्वार कीमत में उत्पाद शुल्क या फैक्टरी से निकास के बाद के व्यय के घटक शामिल नहीं होते हैं। अतः, संघ का वक्तव्य इस जांच के संगत नहीं है।

च. क्षति के जारी रहने और कारणात्मक संबंध के बारे में निष्कर्ष

45. उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी मानते हैं कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों की मात्रा में न केवल निरपेक्ष रूप से बल्कि भारत में कुल माँग एवं घरेलू उत्पादन की तुलना में गिरावट आई है। इसके अलावा, कुल माँग में घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा, बिक्री, उत्पादन, वस्तु सूची जैसे मानदण्डों में गिरावट प्रदर्शित नहीं हुई है, जिससे घरेलू उद्योग तथा समग्र रूप से घरेलू उद्योग को अत्यधिक मात्रा में क्षति की अनुपस्थिति का संकेत मिलता है। तथापि, कीमत प्रभावों के कारण घरेलू उद्योग

को काफी नुकसान हुआ है क्योंकि कीमत कटौती जो कि आधार वर्ष में ऋणात्मक थी, जांच अवधि के दौरान न केवल सकारात्मक बल्कि बहुत अधिक हो गई थी। घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत में वृद्धि के बावजूद संबद्ध देश से पाटित संबद्ध वस्तु की पहुँच कीमत में लगातार गिरावट आई है जिससे कीमत ह्रास का संकेत मिलता है। यह भी नोट किया गया है कि विचाराधीन उत्पाद के लिए घरेलू उद्योग की लाभप्रदता जांच अवधि के दौरान ऋणात्मक हो गई है और जांच अवधि के दौरान निवेश पर आय तथा नकद प्रवाह पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है और वे घटकर न्यूनतम स्तर पर रह गए हैं। संबद्ध देश से पाटन मार्जिन को बहुत अधिक माना गया है। उपर्युक्त के आधार पर यह माना गया है कि नियमों में किए गए निर्धारण के अनुसार घरेलू उद्योग को आर्थिक क्षति हुई है। संबद्ध देश से पाटित आयातों से इतर कोई और कारक, जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हुई हो सकती है, प्राधिकारी की जानकारी में नहीं लाया गया है।

छ. पाटन तथा क्षति के जारी रहने की संभावना

जांच अवधि में कम स्तर पर आयात और संबद्ध देशों के निर्यातकों की अप्रयुक्त क्षमता

46. घरेलू उद्योग द्वारा यह निवेदन किया गया है कि केवल जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से आयात कम रहे थे जबकि बाकी सभी वर्षों में न केवल कुल आयातों में हिस्से के रूप में बल्कि कुल माँग एवं घरेलू उत्पादन के संबंध में भी आयात बहुत अधिक थे। यह भी निवेदन किया गया है कि अन्य वर्षों की तुलना में जांच अवधि के दौरान आयातों का निम्न स्तर केवल इस तथ्य के कारण है कि संबद्ध देशों के निर्यातकों ने जानबूझ कर और नीति के रूप में निर्यातों में पाटनरोधी शुल्क के पुनः अधिरोपण से बचने की दृष्टि से कमी की है। जांच अवधि से पूर्व के वर्षों में संबद्ध देशों से अत्यधिक आयात और जांच अवधि के दौरान कम आयात से संबद्ध देशों के निर्यातकों के संभावित भावी व्यवहार का स्पष्ट एवं दृढ़ संकेत मिलता है। यह भी निवेदन किया गया है कि संबद्ध देशों के विरुद्ध पाटनरोधी शुल्क हटा लिए जाने की स्थिति में संबद्ध देशों से पाटित आयातों में तेजी आने की पूरी संभावना है और घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहेगी। इस जांच के किसी अन्य हितबद्ध पक्षकार से कोई टिप्पणी प्राप्त नहीं हुई है। इस समीक्षा में इंडोनेशिया तथा थाइलैंड के एक निर्यातक ने सहयोग किया है और उनकी सूचना की जांच करने के बाद यह नोट किया गया है कि इन निर्यातकों के पास पर्याप्त अप्रयुक्त क्षमता है और भारतीय बाजार में उनके पाटन जारी रखने की जबरदस्त संभावना है।

कीमत कटौती तथा कम कीमत पर बिक्री :

48. निम्नलिखित तालिका से यह देखा जा सकता है कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से कम कीमत पर बिक्री और कीमत कटौती बहुत अधिक है :-

कीमत कटौती

	अप्रैल 01 से मार्च 02	अप्रैल 02 से मार्च 03	अप्रैल 03 से मार्च 04	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
बिक्री कीमत- रु./मी. टन- समग्र रूप से घरेलू उद्योग	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100	112	120	130
पहुँच मूल्य रु./मी. टन				
इंडोनेशिया	46829	61182	62986	59588
मलेशिया	71756	74040	61709	63434

चीनी ताइपेई	61116	59130	55451	54905
थाइलैंड	62111	59356	62254	71886
संबद्ध देश	56937	61525	59962	66317
सूचीबद्ध	100	108	105	116
कीमत कटौती रु./मी. टन				
इंडोनेशिया	****	****	****	****
मलेशिया	****	****	****	****
चीनी ताइपेई	****	****	****	****
थाइलैंड	****	****	****	****
संबद्ध देश	****	****	****	****
कीमत कटौती (%)				
इंडोनेशिया	****	****	****	****
मलेशिया	****	****	****	****
चीनी ताइपेई	****	****	****	****
थाइलैंड	****	****	****	****
संबद्ध देश	****	****	****	****
कीमत कटौती (%) - रेंज				
इंडोनेशिया	17% से 1%	-8 से 5%	1% से 8%	8% से 20%
मलेशिया	-50% से 15%	-40 से -10%	1% से 11%	5% से 14%
चीनी ताइपेई	-25% से -5%	-10 से 1%	8% से 20%	15% से 28%
थाइलैंड	-26% से -6%	-12 से 1%	1% से 10%	-8% से 5%
संबद्ध देश	-12% से 1%	-8 से 5%	1% से 15%	4% से 16%

कम कीमत पर बिक्री

	जांच अवधि (वार्षिकीकृत)
क्षतिरहित कीमत- रु./मी. टन	****
पहुँच मूल्य रु./मी. टन	
इंडोनेशिया	59588
मलेशिया	63434
चीनी ताइपेई	54905
थाइलैंड	71886
संबद्ध देश	66317
कम कीमत पर बिक्री- रु./मी. टन	
इंडोनेशिया	****
मलेशिया	****
चीनी ताइपेई	****
थाइलैंड	****
संबद्ध देश	****
कम कीमत पर बिक्री (%)	
इंडोनेशिया	****
मलेशिया	****
चीनी ताइपेई	****

थाइलैंड	****
संबद्ध देश	****
कम कीमत पर बिक्री (%)— रेंज	
इंडोनेशिया	12% से 30%
मलेशिया	15% से 28%
चीनी ताइपेई	20% से 39%
थाइलैंड	3% से 12%
संबद्ध देश	8% से 22%

49. जांच अवधि के दौरान कम कीमत पर बिक्री और कीमत कटौती के बहुत उच्च स्तर से संबद्ध वस्तु के कीमत निर्धारण के संबंध में संबद्ध देशों के निर्यातकों के संभावित भावी व्यवहार का संकेत मिलता है। यह भी कहा जा सकता है कि इस कम कीमत पर बिक्री और कटौती का निर्धारण (पहुँच मूल्य का परिकलन करते समय) विद्यमान पाटनरोधी शुल्कों पर विचार किए बिना किया गया है और यह तथ्य स्वयं यह दर्शाता है कि पाटनरोधी शुल्क को समाप्त होने देने की स्थिति में कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री मार्जिन में वृद्धि होने की संभावना है।

पाटन मार्जिनों का उच्च स्तर

50. यह पहले ही नोट किया गया है कि पाटनरोधी शुल्कों के विद्यमान होने के बावजूद प्रत्येक संबद्ध देश से पाटन मार्जिन बहुत अधिक है। जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से पाटन मार्जिन के उच्च स्तर से इस संभावना का संकेत मिलता है कि इससे घरेलू उद्योग के निष्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ना जारी रहेगा।

ऋणात्मक लाभप्रदता लगातार क्षति को दर्शाती है :

51.. जांच अवधि के दौरान हुए घाटों से स्पष्ट एवं दृढ़ संकेत मिलता है कि घरेलू उद्योग को क्षति होना जारी है और इस बात की पूरी संभावना है कि संबद्ध देशों से अत्यधिक पाटन जारी रहेगा और पुनः शुरु हो जाएगा तथा इससे घाटों तथा क्षति के रूप में घरेलू उद्योग की स्थिति और खराब होगी।

पाटन एवं क्षति के जारी रहने की संभावना संबंधी निष्कर्ष

52. अतः, उपर्युक्त से यह देखा जा सकता है कि यदि वर्तमान पाटनरोधी शुल्क को समाप्त होने दिया जाए तो संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु का पाटन तथा घरेलू उद्योग को क्षति के जारी रहने की अत्यधिक संभावना बनी हुई है।

ज. क्षति मार्जिन की मात्रा

क्षतिरहित कीमत का निर्धारण

53. प्राधिकारी ने माननीय उच्चतम न्यायालय के पूर्वोल्लिखित निर्णय के अनुसार समग्र रूप से घरेलू उद्योग के लिए क्षतिरहित कीमत का निर्धारण किया और क्षतिरहित कीमत के निर्धारण की प्रणाली का विस्तृत प्रकटन घरेलू उद्योग के समक्ष किया गया था।

54. प्राधिकारी नोट करते हैं कि भारत के माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा निर्धारित दिशानिर्देशों और प्रणाली को ध्यान में रखते हुए माननीय उच्चतम न्यायालय के निर्णय के अनुसार समग्र रूप से घरेलू उद्योग के लिए क्षतिरहित कीमत का निर्धारण किया गया है और समग्र रूप से घरेलू उद्योग के लिए **** रु./मी. टन भारत औसत क्षतिरहित कीमत का निर्धारण किया गया है।

55. प्राधिकारी द्वारा निर्धारित क्षतिरहित कीमत घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु की सभी किस्मों का भारत औसत है और क्षति मार्जिन के निर्धारण के लिए उसकी तुलना संबद्ध देशों से निर्यातों के भारत औसत पहुँच मूल्य से की गई है। संबद्ध देशों से निर्यातों की भारत औसत पहुँच कीमत और क्षति मार्जिन का परिकलन निम्नानुसार किया गया है :-

क्षति मार्जिन संबंधी परिकलन

कम्पनी/देश	क्षति मार्जिन	क्षति मार्जिन %
मै. हुआलॉन	****	4-8%
मै. पॉलीसिंडो	****	4-8%
मलेशिया के अन्य निर्यातक	****	10-15%
इंडोनेशिया के अन्य निर्यातक	****	10-15%
चीनी ताइपेई के सभी निर्यातक	****	30-40%
थाइलैंड के सभी निर्यातक	****	4-8%

झ. भारतीय उद्योग का हित तथा अन्य मुद्दे

56. प्राधिकारी मानते हैं कि सामान्य रूप से पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य पाटन की अनुचित व्यापार प्रथा से घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करना है ताकि मुक्त एवं उचित प्रतिस्पर्धा की पुनर्बहाली को सुकर बनाया जा सके।

57. प्राधिकारी यह भी स्वीकार करते हैं कि यद्यपि पाटनरोधी शुल्क के अधिरोपण से संबद्ध वस्तु का प्रयोग करके विनिर्मित उत्पादों का कीमत स्तर प्रभावित होगा और परिणामस्वरूप इन उत्पादों की तुलनात्मक प्रतिस्पर्धात्मकता भी प्रभावित होगी, तथापि, इन पाटनरोधी उत्पादों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा में कमी नहीं होगी। इसके विपरीत, पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने से पाटन की प्रथाओं से प्राप्त अनुचित लाभ समाप्त हो जाएगा और घरेलू उद्योग के पतन पर रोक लगेगी तथा उपभोक्ताओं के लिए संबद्ध वस्तु के अधिक विकल्प बनाए रखने में सहायता मिलेगी।

ञ. निष्कर्ष

58. उपर्युक्त का अनुपालन एवं उस पर विचार करने के बाद प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि :-

1. संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहाँ से निर्यातित संबद्ध वस्तु का उसके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर भारत को निर्यात किया गया है;
2. घरेलू उद्योग को आर्थिक क्षति हुई है;
3. संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को क्षति हुई है;
4. संबद्ध देशों से आयातों के संबंध में पाटनरोधी शुल्क लगाया जाना अपेक्षित है क्योंकि उसे समाप्त करने से पाटन एवं क्षति जारी रहेंगे।

5. प्राधिकारी नीचे तालिका में दिए गए प्रारूप एवं पद्धति में संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयात पर यथासंशोधित पाटनरोधी शुल्क जारी रखने की सिफारिश करना उचित समझते हैं।

ट. सिफारिशें :

59. प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्णायक समीक्षा जाँच की शुरुआत की सूचना सभी हितबद्ध पक्षकारों को दी गई थी और पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंध के पहलुओं पर सकारात्मक सूचना प्रदान करने के लिए निर्यातकों, आयातकों तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया था। निर्धारित नियमों के अनुसार पाटन, क्षति तथा पाटन एवं घरेलू उद्योग को क्षति के बीच कारणात्मक संबंध की अंतिम जांच शुरू करके पूरी करने और संबद्ध देश के विरुद्ध सकारात्मक पाटन मार्जिन तथा ऐसे पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को क्षति का निश्चयात्मक निर्धारण करने के बाद प्राधिकारी का यह मत है कि पाटन एवं क्षति को समाप्त करने के लिए निश्चयात्मक शुल्क के अधिरोपण को जारी रखना अपेक्षित है।

60. अतः प्राधिकारी नीचे दिए गए प्रारूप एवं पद्धति में संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयात पर यथासंशोधित पाटनरोधी शुल्क जारी रखने की सिफारिश करना आवश्यक समझते हैं:

61. प्राधिकारी द्वारा पालन किए गए कम शुल्क के नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन में से कमतर के समतुल्य निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क के अधिरोपण की सिफारिश करते हैं, ताकि घरेलू उद्योग को क्षति समाप्त हो सके। तदनुसार, संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित, सीमाशुल्क टैरिफ वर्गीकरण अधिनियम, 1975 के अध्याय 54 के अंतर्गत आने वाले पार्शियली ओरिएण्टेड यार्न (पीओवाई) से सभी आयातों पर नीचे दी गई तालिका के कॉलम 9 में दी गई राशि के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश की गई है।

क्र. सं.	शीर्ष	वस्तु विवरण	विनिर्देशन	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि अम. डॉ./ मी. टन	माप की इकाई	मुद्रा
-1	-2	-3	-4	-5	-6	-7	-8	-9	-10	-11
1	5402	पार्शियली ओरिएण्टेड यार्न- सभी प्रकार	कोई	चीनी ताइपेई	कोई	कोई	कोई	461.52	मी. टन	अम. डा.
2	5402	-वही-	-वही-	चीनी ताइपेई को छोड़कर कोई अन्य	चीनी ताइपेई	कोई	कोई	461.52	मी. टन	अम. डा.
3	5402	पार्शियली ओरिएण्टेड यार्न- सभी प्रकार	कोई	थाइलैण्ड	कोई	कोई	कोई	461.52	मी. टन	अम. डा.
4	5402	-वही-	-वही-	थाइलैण्ड को छोड़कर कोई अन्य	थाइलैण्ड	कोई	कोई	83.74	मी. टन	अम. डा.
5	5402	पार्शियली ओरिएण्टेड यार्न- सभी प्रकार	कोई	इंडोनेशिया	इंडोनेशिया	मै. पी.टी. पॉलीसिन्डो एका पर्कसा	मै. पी.टी. पॉलीसिन्डो एका पर्कसा	83.74	मी. टन	अम. डा.

282/61/07-5

6	5402	पार्शियली ओरिएण्टेड यार्न- सभी प्रकार	कोई	इंडोनेशिया	इंडोनेशिया	मै. पी.टी. पॉलीसिन्डो एका पर्कसा को छोड़कर कोई अन्य	मै. पी.टी. पॉलीसिन्डो एका पर्कसा को छोड़कर कोई अन्य	83.74	मी. टन	अम. डा.
7	5402	पार्शियली ओरिएण्टेड यार्न- सभी प्रकार	कोई	इंडोनेशिया	इंडोनेशिया को छोड़कर कोई अन्य	कोई	कोई	88.68	मी. टन	अम. डा.
8	5402	पार्शियली ओरिएण्टेड यार्न- सभी प्रकार	कोई	इंडोनेशिया को छोड़कर कोई अन्य	इंडोनेशिया	कोई	कोई	140.05	मी. टन	अम. डा.
9	5402	पार्शियली ओरिएण्टेड यार्न- सभी प्रकार	कोई	मलेशिया	मलेशिया	मै. हुआलॉन कॉर्पोरेशन (एम) एसडीएन बीएचडी	मै. हुआलॉन कॉर्पोरेशन (एम) एसडीएन बीएचडी	140.05	मी. टन	अम. डा.
10	5402	पार्शियली ओरिएण्टेड यार्न- सभी प्रकार	कोई	मलेशिया	मलेशिया	मै. हुआलॉन कॉर्पोरेशन (एम) एसडीएन बीएचडी को छोड़कर कोई अन्य	मै. हुआलॉन कॉर्पोरेशन (एम) एसडीएन बीएचडी को छोड़कर कोई अन्य	140.05	मी. टन	अम. डा.
11	5402	पार्शियली ओरिएण्टेड यार्न- सभी प्रकार	कोई	मलेशिया	मलेशिया को छोड़कर कोई अन्य	कोई	कोई	74.13	मी. टन	अम. डा.
12	5402	पार्शियली ओरिएण्टेड यार्न- सभी प्रकार	कोई	मलेशिया को छोड़कर कोई अन्य	मलेशिया	कोई	कोई	185.03	मी. टन	अम. डा.
13	5402	पार्शियली ओरिएण्टेड यार्न- सभी प्रकार	कोई	मलेशिया को छोड़कर कोई अन्य	मलेशिया	कोई	कोई	185.03	मी. टन	अम. डा.
14	5402	पार्शियली ओरिएण्टेड यार्न- सभी प्रकार	कोई	मलेशिया को छोड़कर कोई अन्य	मलेशिया	कोई	कोई	185.03	मी. टन	अम. डा.

ठ. आगे की प्रक्रिया

62. इस सिफारिश के कारण सरकार के आदेशों के विरुद्ध कोई अपील अधिनियम के संगत प्रावधानों के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क एवं सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष प्रस्तुत की जाएगी।

63. प्राधिकारी अधिनियम के संगत प्रावधानों और समय-समय पर इस संबंध में जारी सार्वजनिक सूचनाओं के अनुसार यहाँ निश्चयात्मक उपाय, जिसकी यहाँ सिफारिश की गई है, को जारी रखने, उसमें परिवर्तन या उसे समाप्त करने की आवश्यकता की समीक्षा करेंगे। ऐसी किसी समीक्षा के लिए किसी अनुरोध पर प्राधिकारी द्वारा तब तक विचार नहीं किया जाएगा, जब तक इस प्रयोजनार्थ निर्धारित समय-सीमा के अनुसार किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा उसे प्रस्तुत नहीं किया जाएगा।

आर. गोपालन, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 18th June, 2007

FINAL FINDINGS

**Subject : Anti-dumping investigation concerning imports of Partially Oriented Yarn (POY) from Thailand, Indonesia, Malaysia and Chinese Taipei—
Final Findings of Sunset Review**

No. 15/9/2005-DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 (hereinafter referred to as the Rules) thereof:

1. Whereas M/s Association of Synthetic Fibre Industries (hereinafter referred to as the Applicant) on behalf of domestic producers namely M/s Arfees Industries Ltd., M/s Appollo Fibres Ltd., M/s Central India Polyesters Ltd., M/s Century Enka Ltd., M/s Filatex Industries Ltd. M/s Garden Silk Mills Ltd., M/s Indo Rama Synthetics (India) Ltd., M/s JBF Ltd., M/s Modern Petrofils Ltd., M/s Nakoda Textiles Industries Ltd., M/s Recron Synthetics Ltd. and M/s Welspun Syntex Ltd, filed an application before the Designated Authority (hereinafter also referred to as the Authority), in response to alert letter wherein the applicants requested the Authority to continue the anti dumping duty beyond the original period of five years alleging likelihood of continued dumping and injury on account of import of subject goods from subject countries along with the prima facie evidence. It was also stated that withdrawal of anti dumping duties on subject goods from subject countries would result in continuation or recurrence of dumping and injury and the domestic industry requested the Authority for initiation of sunset review of anti dumping duty imposed on the subject goods.

2. And whereas the Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the applicants on behalf of the domestic industry, issued a

public notice dated 20th December 2005 published in the Gazette of India, Extraordinary initiating sunset review of anti dumping duty imposed on the subject goods originating in or exported from the subject countries to determine whether withdrawal of anti dumping duties on subject goods from subject countries would result in continuation or recurrence of dumping and injury in accordance with the Customs Tariff Act and the AD Rules,

A. PROCEDURE

3. The procedure described below has been followed with regard to the investigation.

ii) The Authority forwarded copy of the said public notice to the known exporters, importers/users and to the applicants and gave them an opportunity to make their views known in writing within forty days from the date of the publication of initiation notification in accordance with the Rule 6(2):

iii) According to sub-rule (3) of Rule 6 supra, the Authority provided a copy of the application to the known exporters/manufacturers from subject countries and Embassies of subject countries in India;

iv) In response to the initiation notification none of the exporters/producers from subject countries with the exception of M/s Hualon Corporation, Malaysia and M/s Polysindo from Indonesia responded to the exporters questionnaire. Their information was subsequently verified by the Authority after conducting the on site verification at the premises of the cooperating exporters and a verification report was issued to the cooperating exporters for their comments. No comments were received within the stipulated date following the issuance of verification report from these two exporters.

v) The Embassies of the subject countries were informed about the initiation of the investigation in accordance with Rule 6(2) with a request to advise the exporters/producers from their countries to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letter, application and questionnaire was sent to the exporters was also sent to them;

vi) A questionnaire was sent to the following known importers/user associations of the subject goods for necessary information in accordance with Rule 6(4):

1. All India Texturisers Association, Mumbai
2. South Gujarat Texturisers Welfare Association, Surat
3. Suntex India
4. Galaxy Textiles
5. Harmony Yarns PVT. Ltd.
6. AVM Exports
7. Garg Tex-O-Fab Ltd.

8. Boghara Polyfab Private Ltd.
9. Silvassa Industries Ltd.
10. Beekaylon Synthetics Ltd.
11. Alok Industries Ltd.
12. Bajari Filaments P Ltd.
13. Sidhvan Yarns Ltd.
14. Crimpon Yarns
15. Uni Tex Texturisers
16. Unify Texturisers
17. Ghoomtex (India) Pvt Ltd.
18. MehraTex India P Ltd.
19. SRV Polytex Pvt. Ltd.
20. Synfab Sales and Industries Ltd.

vii) In response to the above notification M/s All India Texturisers' Association, Mumbai and Federation of Indian Art Silk Weaving Industry (FIASWI) have filed their submissions. Their submissions have been taken into account and examined to the extent they have relevant to the anti dumping investigations.

viii) A copy of the non-confidential application was also provided to other interested parties, wherever requested.

ix) The Authority kept available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties as per Rule 6(7).

x) Cost investigations were conducted to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the applicant so as to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic industry.

xi) A public hearing was held on 23rd August 2006 under the chairmanship of Designated Authority, which was attended by representatives of the Domestic Industry and other interested parties. However, during the process of the hearing, one interested party argued that they did not get the notice of the public hearing in time and hence they requested another public hearing. Following the request of the interested party, the Authority agreed for another hearing, which was held on 20th September 2006. The parties attending the public hearing were requested to file written submissions of views expressed orally. The Authority in this finding has considered the written submissions and rejoinders thus received from interested parties.

xii) **** in this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules on merits. In accordance with Rule 16 of the Rules

supra, the essential facts/basis considered for these findings was disclosed to known interested parties on 26th April, 2007 and comments received on the same by various interested parties are duly considered in Final Findings.

xiii) Investigation was carried out for the period starting from 1 April 2004 to 30th June 2005 (15 months) i.e. the period of investigation (POI). The examination of trends in the context of injury analysis covered the period 2001-02, 2002-03, 2003-04 and the POI.

B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION, LIKE ARTICLE AND DOMESTIC INDUSTRY:

B1: PRODUCT UNDER CONSIDERATION

4. The product under consideration in the present application is Partially Oriented Yarn generally known as POY. It falls under the Custom Tariff Heading 5402 (with customs subheading now as 5402 4600). However, the Customs classification is indicative only and is in no way binding on the scope of the present investigation. It is a yarn of polyester and is an intermediate, which is subject to further processing, for example, texturing or draw twisting, to make it suitable for weaving or knitting into fabrics. It has been contended by the importers and users that the applicant has not specified the denier for which the anti-dumping duty is sought as the same are produced in a wide range. It has also been argued that the subject goods are manufactured from various processes and raw material and the subject goods should be classified as per the source raw material.

5. On the other hand, it has been claimed by the applicants that the subject goods specified in the application cover all types of denier and there is no need that the denier of the subject goods is to be specified in the application. They have therefore contended that the submission of the importers and the users is baseless and devoid of any merit.

6. The issue raised by various interested parties have been examined and after examination, it is noted that the application by the domestic industry has been made covering all deniers. Further, the Designated Authority has also carried out the analysis considering the entire product under consideration. Therefore, the Authority does not find any merit in the argument of the importers for examining any particular denier of the product under consideration. With regards to the submissions of the interested parties that Teflon treated polyester yarns and polyester nano technology yarns are not produced by the petitioners and hence should be taken outside the scope of the product under consideration, it is noted by Authority that noted that these yarns are not covered under the scope of POY as these products have been further processed. Further, it is also noted that there have been no submissions by the exporters from subject country with regards to the various grades and types/deniers of the

product under consideration exported by them to India and that sold in the exporting country except M/s Hualon and M/s Polysindo. Out of the two cooperating exporters, M/s Hualon Corporation has also not argued. Further, none of the importers have submitted any information along with the evidence to the Authority or requested the Authority for deier wise examination of the product under consideration. The Authority has considered the views expressed on the issue and holds that the product under consideration does not suffer from any infirmity as claimed by the importers/users. Thus, the product under consideration as defined in the original investigations and as mentioned in the preceding paragraph is confirmed in the final findings.

B2: LIKE ARTICLE

7. Rule 2(d) of AD Rules defines Like Article as

"an article which is identical or alike in all respects to the article under investigation for being dumped in India or in the absence of such article, another article which although not alike in all respects, has characteristics closely resembling those of the articles under investigation."

The applicants have claimed that the subject goods, which are being dumped into India, are identical to the goods produced by the domestic industry. There are no differences either in the technical specifications, quality, functions or end-uses of the dumped imports and the domestically produced subject good. The Authority notes that neither the exporters nor the interested parties have disputed the fact that there is any difference in the dumped goods and the product under consideration manufactured by the domestic industry. The Authority observes that the imported goods are used by the user industry interchangeably with the goods produced by the domestic industry. The subject goods produced by the domestic industry and produced by the subject countries being technically and commercially substitutable, are 'like articles' under the Anti Dumping Rules. Therefore, for the purpose of the present investigation, the subject goods produced by the applicants in India are being treated as 'Like Articles' to the subject goods being imported from the subject country.

B3: DOMESTIC INDUSTRY

8. Rule 2(b) defines domestic industry as under:-

(b) "domestic industry" means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the

alleged dumped article or are themselves importers thereof in which case such producers shall be deemed not to form part of domestic industry:

It is noted that the application has been filed by M/s Association of Synthetic Fibre Industry, New Delhi on behalf of domestic industry comprising of the following producers of subject goods in India:

- I. Arfees Industries Ltd.
- II. Apollo Fibres Ltd.
- III. Central India Polyesters Ltd.
- IV. Century Enka Ltd.
- V. Filatex Industries Ltd.
- VI. Garden Silk Mills Ltd.
- VII. Indo Rama Synthetics (India) Ltd
- VIII. JBF Ltd.
- IX. Modern Petrofils Ltd.
- X. Nakoda Textiles Industries Ltd.
- XI. Recron Synthetics Limited
- XII. Welspun Syntex Ltd.

9. The Authority notes that the application has also been supported by the following producers:

- a. Reliance industries Ltd.
- b. Sanghi Polyesters Ltd.
- c. Nova Petrochemicals Ltd.
- d. Gokulanand Petrofibres
- e. Rajvi Petrochem (P) Ltd.

10. From the examination of the information submitted by the applicants, it is noted that the collective production of the aforesaid producers constitutes a major proportion of the total domestic production of the like article and therefore they represented the domestic industry within the meaning of Rule 2(b) of the Rules supra.

B4: PERIOD OF INVESTIGATION

11. Various interested parties have also stated that the POI should be taken as 12 months i.e. 2004-05 and not 15 months as taken by the Authority in this investigation. The issue has been examined and it is considered that it is the established practice of this Directorate to consider the period of investigation as latest as possible (to the date of initiation) and that the gap between the last day of the period of investigation and the date of initiation should not be more than 6 months. It is noted by the Authority that had the period of investigation been taken as 2004-05, the gap between the period of investigation and the date of initiation would have been more than 6 months and not in conformity with

the policy. Thus, the Authority's decision to take POI of 15 months in this case is borne out of the practice of the Authority to keep the POI as close to the initiation as possible and in any case not later than 6 months from the date of POI and also taking into account easier availability of the information of the domestic industry in the form of the one full financial year. It was also noted that there are a large number of the domestic industries in this investigation and taking 9 months data out of the 12 months financial year data would have created difficulties for the Authority as well as to the domestic industry.

C. CONTINUATION OF DUMPING FROM SUBJECT COUNTRIES- DETERMINATION OF DUMPING MARGIN

C1 : NORMAL VALUE FOR CHINESE TAIPEI AND THAILAND

12. There was no cooperation from any of the producers and exporters from these two countries. A few producers and exporters from Thailand did ask some queries and asked for extension, but in the end despite the repeated reminders from the Authority, there was no response. The producer's exporters from Thailand who made themselves known during the POI were reminded of the fact that as per Para 1 of the Annexure II of the agreement of Anti Dumping, if the information is not supplied within a stipulated time, the Authorities would be free to make determinations on the basis of the facts available, including those contained in the application for the initiation of the investigation by the domestic industry. Despite the repeated reminders, response to the exporters questionnaire in the form and manner as stated in the questionnaire was not received from any interested parties and hence the Authority proceeded to determine the normal value on the basis of best facts available as per Rule 6(8) of the Anti dumping rules. With regard to these two subject countries, the Authority has determined normal values for the subject goods in Thailand and Chinese Taipei considering constructed cost of production including selling, general and administrative overheads and reasonable profit for subject countries. The constructed normal values for all producers and exporters from Thailand is determined as US \$ ****/MT while that of Chinese Taipei is US \$ ****/MT.

C2: EXPORT PRICE FOR CHINESE TAIPEI AND THAILAND

13. In the application submitted for initiation of investigation, the applicant had worked out export price based on the DGCI&S import data. The Authority examined the import data from DGCI&S and it was found that the volume and value of the imports of subject goods is reflected under Custom Tariff Heading 5402.42, which is a dedicated code for the product under consideration. Further, during the public hearing and submissions made by the various interested parties, it was pointed out that the while determining the volume and value of import, the Authority

287/61 107-6

had taken into account many transactions relating to the imports of yarns other than POY. After the public hearing, the Authority reexamined the transaction wise information pertaining to import of product under consideration from subject countries and it was found that though the ITC HS classification is a dedicated code for the product under consideration, it did have some transactions of spin drawn yarn and fully drawn yarn and others. After the examination, the Authority has reworked the volume and value of imports of subject goods from subject countries and following the reexamination, the CIF export price for all producers and exporters from Thailand as per the DGCI&S transaction wise import data was determined as US \$ ****/MT. After considering price adjustments on account of marine insurance, commission, ocean freight, bank charges & port expenses, the net export price comes to (US \$ **** per MT). With regards to imports from Chinese Taipei, the CIF export price for all producers and exporters from Chinese Taipei as per the DGCI&S transaction wise import data was determined as US \$ ****/MT. After considering price adjustments on account of marine insurance, commission, ocean freight, bank charges & port expenses, the net export price comes to (US \$ **** per MT).

C3: DUMPING MARGIN FOR CHINESE TAIPEI AND THAILAND

14. Considering the constructed normal value and the net export price determined at the ex factory level, as detailed above, dumping margin has been determined, which comes to (US \$ **** per MT) for all producers and exporters from Thailand and which works out as 13.75% of net export price. The dumping margin for all producers and exporters for Chinese Taipei using the same methodology as in the case of Thailand is determined as US \$ ****/MT which works out as 49.71% of the net export price.

C4: NORMAL VALUE FOR POLYSINDO, INDONESIA

15. M/s Polysindo produces the following five products: POY of different deniers, Textured Yarn (DTY), Fully Oriented Yarn (FOY), and Fibre Chip. While the production of four of the five major products takes place at Kaliwungu, the production of chip takes place at another location viz. Karawang. It is recalled that M/s Polysindo had submitted the information to the exporters questionnaire stating the denier, filaments and their types and they had requested the Authority to determine their dumping margin as per the PCN (product control number). It was also submitted that they did not have any export sales to India during the POI and they exported only one type of subject goods in the global market. During the examination of the exporters questionnaire, it was first determined that whether the total domestic sales of the subject goods with regard to their PCN (Product control nomenclature) by the producers/exporters in the subject country was representative when

compared to their total sales of the subject goods (for the same PCN) concerned sold in the exporting country. Thereafter, it was examined whether their sales (PCN wise) are under ordinary course of trade in terms of Rule 2 of the annexure I to the anti dumping rules. The exporters have provided transaction wise details of sales made in home market. The information has been relied upon to determine separate weighted average selling price for each type of subject goods considering denier and category, of the subject goods sold in the home market. In case sales volume in the domestic market of a particular type of subject goods (in this case, only one type) is more than 5% of exports to all countries of the world , the domestic price has been considered. The cost of production claimed by the exporters have been admitted after suitable modification (during the verification tour). It may be added that separate costs of manufacturing of the subject goods solely in terms of the above type were accepted by the Authority after suitable modifications (a copy of the confidential copy of the verification report detailing the factual elements of the normal value were disclosed to the exporter and no comments have since been made by the exporter).

16. For the determination of the ordinary course of trade test, the cost of production of the product concerned was examined with reference to the records maintained by the producer. Further, all domestic sales transactions were examined with reference to the cost of production of the subject goods to determine whether the domestic sales were in the ordinary course of trade or not. Thus only the profitable transactions have been taken into consideration for the determination of normal value for the cooperating exporter where sales below costs exceed 20%. The net ex-factory domestic selling price was US \$ **** per kg.

C5: EXPORT PRICE FOR POLYSINDO, INDONESIA

17. There were no exports to India during POI. In the absence of the export sales to India, the Authority determined the export price of the subject goods to other countries for the purpose of determining the likelihood of dumping (likely dumping margin). It was noted that M/s Polysindo reported **** transactions in Appendix 3C for the export sale to other countries. From Invoice price, various expenses incurred by Polysindo were deducted to arrive at the Ex factory selling price. The adjustments claimed include commission, inland insurance, inland freight, ocean freight, ocean insurance and bank charges/interest. After verification of all the adjustments, ex factory net export price was determined as US \$ ****/per kg.

In the comments to disclosure statement, the exporter stated that the adoption of weighted average export price of all the exports made by

Polysindo during POI to countries other than India may not appear to reflect the market reality that had prevailed in India. In their opinion the Authority should have considered their export price to Argentina, as the economic development in Argentina is comparable to that of India. The dumping margin in this case would be negative and there would be no likelihood of recurrence of dumping if the measures are repealed for this exporter.

The Authority notes that the exporter has not cited any reasons or authority of law as to why a particular country is to be adopted for the purpose of determination of export price in the absence of exports by the exporter during the POI. The exporter has also not provided any details or evidence regarding the market conditions or prevailing in Argentina or any other reason to justify their claim. Only a bare statement has been made that the level of economic development of Argentina and India are similar. In the absence of any supportive data or legal provisions, the Authority does not find it appropriate to take export price of any particular country.

C6: DUMPING MARGIN FOR POLYSINDO, INDONESIA

18. For the purpose of a fair comparison between normal value and the export price, the Authority has determined both the normal value and export price at ex-factory level. Both the normal value and export price pertains to the same period. Both the prices are free of taxes. Thus, the Authority considers that the comparison made constitutes a fair comparison. Considering the normal value and the net export price determined as detailed above, dumping margin has been determined, which comes to (US \$ **** per MT) which works out as 8.77% of net export price.

C7: DUMPING MARGIN FOR OTHER EXPORTERS FROM INDONESIA

19. The weighted average export price has been determined by taking the lowest price of the subject goods of the cooperating exporter. The weighted average normal value determined for the subject country has been compared with the net export prices determined for the non-cooperating exporters from the subject country to arrive at the dumping margin for non-cooperating exporters, which works out after adjustments as US\$ ****/MT or 12.12%.

C8: NORMAL VALUE FOR M/S HUALON CORPORATION, MALAYSIA

20. M/s. Hualon Corporation has its factory at Nilai, Kuala Lumpur where it manufactures range of products including the product under consideration. The products manufactured by M/s. Hualon are derived from direct spinning process (taking PTA plus MEG as a feedstock and then converting it to Polymer and thereafter to subject goods directly) and also from chips spinning process (taking the same feedstock and converting it to polymer and then to chips and thereafter the subject goods). It was also seen that the company manufactures product in the different deniers, filament, cross section, luster, color and grades and these could be further separated into fully drawn yarn, POY and other man-made filament yarns. The production of subject goods is carried out at the facility called Nilai near Kuala Lumpur. It was noted that the M/s Hualon had a domestic sales in sufficient quantities as compared to the export sales to India hence the domestic sales as given in the appendix 1 was accepted for verification as it fell within the purview of sufficient domestic sales as defined in the footnote to Article 2 of the Agreement on Antidumping. Further, it was verified from the records that they have made 24 transactions in the domestic market and there is no adjustments claimed by Hualon in the form of discounts or credit in their domestic sales for arriving at the ex factory price for sales made in the domestic market.

21. It may also be noted that the exporter had not given separate cost of production with regard to different grades produced by it nor it had claimed determination of dumping margin based on different grades produced by it which are sold in the domestic market and also exported to India and other countries. Based on this information, the net ex-factory domestic selling price as mentioned above pertains to all the grades of the POY manufactured by the exporter. The information pertaining to domestic sales was thus fully verified and the net domestic selling price was determined as US \$ ****/Kg.

C9: EXPORT PRICE FOR M/S HUALON CORPORATION, MALAYSIA

22. After verifying the records, it was determined that the firm had exported **** MTs of subject goods during the period of investigation at a gross invoice value of US \$ ****. From Invoice price, various expenses incurred by M/s Hualon were deducted to arrive at the Ex factory selling price. The adjustments claimed include commission, inland insurance, inland freight, ocean freight, ocean insurance and bank charges/interest.

After verification of all the adjustments, ex factory net export price was determined as US \$ **** per kg.

C10: DUMPING MARGIN FOR M/S HUALON CORPORATION, MALAYSIA

23) For the purpose of a fair comparison between normal value and the export price, the Authority has determined both the normal value and export price at ex-factory level. Both the normal value and export price pertains to the same period. Both the prices are free of taxes. Thus, the Authority considers that the comparison made constitutes a fair comparison. Considering the normal value and the net export price determined as detailed above, dumping margin has been determined, which comes to (US \$ ****per MT) which works out as 5.88% of net export price.

C11: DUMPING MARGIN FOR NON COOPERATING EXPORTERS FROM MALAYSIA

24. Export prices for the other non-cooperative exporters from the subject country has been determined based on the lowest transaction prices of the cooperating exporter. The weighted average normal value determined for the subject country has been compared with the net export prices determined for the non-cooperating exporters from the subject country to arrive at the dumping margin for non-cooperating exporters, which works out after adjustments as US\$ ****/MT or 16.10%.

	Normal value	Net Export Price	DM	DM%
M/s Hualon	****	****	****	5.88
M/s Polysindo	****	****	****	8.77
Other Exporters Malaysia	****	****	****	16.10
Other Exporters Indonesia	****	****	****	12.12
All Exporters Chinese Taipei	****	****	****	49.71
All Exporters Thailand	****	****	****	13.75

D. INJURY AND CAUSAL LINK

25. As per annexure-II (iii), in cases where imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to Anti-dumping investigation, the Authority is required to cumulatively assess effect of such imports, only when it determines that (a) the margin of dumping established in relation to imports from each country is more than 2% expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is 3% of the imports of like article and (b) cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic article.

26. The Authority notes that the margin of dumping in respect of each of the subject country is more than 2% and the volume of imports from each country is also more than 3%.

27. As far as the conditions of competition between imported products and the conditions of competition between the imported products and the like domestic product, the Authority notes that:

- (i) The subject goods have been imported from the subject countries under the same tariff classifications;
- (ii) The imported subject goods are commercial and technical substitutes of the domestically produced POY
- (ii) The subject goods have been imported by the end users and other importers and the goods have entered the commerce of the country through similar channels;

28. Therefore, the Authority is of the view that the exports made from the subject countries compete in the same market, as these are similar products.

29. In view of the above, the Authority holds that it is appropriate to cumulatively assess the effect of dumped imports of the subject goods from the subject countries, on the domestically produced like article in the light of conditions of competition between the imported products and the like domestic product. Therefore, for the purpose of injury and causal link analysis, as discussed above, the dumped imports from the subject countries have been cumulated for examination of volume and price effects of dumped imports of the subject goods from the subject countries on the domestic industry and its effect on the prices and profitability to examine the existence of injury and causal links between

the dumping and injury, if any. The Rules provide for examination of the impact of dumped imports on the domestic industry on the basis of evaluation of all relevant economic factors and indices having bearing on the state of domestic industry. For the purpose of this examination, the applicants constitute the domestic industry within the meaning of the term as defined under Rule 2(b) of the Rules.

30. The domestic industry have submitted that share of imports from China has increased manifold not only in relation to total imports but also in comparison to total demand and total production during the period of investigation as compared to the base year April 01-March 02. It was submitted that the dumped imports from subject countries have affected the domestic prices and the price undercutting and underselling is significant during the period of investigation. The domestic industry has alleged that the market share, capacity utilization, profitability, return on investment, cash flow, growth etc. have declined over the injury investigation period. The sales of the domestic industry have increased, however the increase in sales is less than the increase in demand. Further, the domestic industry had alleged that the margin of dumping from subject countries is also significant during the period of investigation, which shows the difficulties being faced by the domestic industry in disposing of the subject goods.

31. On the other hand, the importers and the user associations submitted that the prices of POY have also come down for other countries and the demand for POY is high right from the year 2001-02 as compared to indigenous production and the indigenous industry has tremendously benefited by creating shortage. It has also been submitted that the decline in market share of the domestic industry is insignificant and sales volume of the domestic industry has increased as a result of increase in demand. Further, it was also submitted that there is no injury with respect to employment and wages and as per the balance sheets of the domestic producers, they are not making losses and most of the companies are profit-making concerns.

32. The importers and user associations have also submitted that the inventories of the petitioners during the period of investigation were in fact lower than from the previous years. Further, the prices of raw material are low and POY prices are high in India as compared to subject countries where raw material prices are high and POY prices are low. It was also held that almost all the companies are increasing their capacities which indicates that the import of POY has not affected the indigenous industry at all.

In the comments to disclosure statement, M/s All India Texturisers Association has stated that the volume of imports have come down in POI as a share of total imports and also as share of total domestic production. Price undercutting analysis is to be made with respect to price of domestic integrated units. Increase in selling price is more than the increase in landed values.

The Authority notes that the decline in imports or negligible imports or the improvement in any particular injury factor in case of sunset review is not per se relevant as the analysis of injury is to be seen with reference to level of duties already in existence. It is also noted that the in case of sunset review investigation, the thrust is mainly on the analysis of likelihood of continuance or recurrence of injury to the domestic industry.

EXAMINATION BY THE AUTHORITY

33. Article 3.1 of the ADA and Annexure II of the AD Rules provide for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices, in the domestic market, for the like products; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. The authority is required to examine whether there has been a significant increase in imports, either in absolute term or relative to production or consumption in the importing member. With regard to the price effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in the importing country, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree, or prevent price increase, which would have otherwise occurred to a significant degree.

34. The Authority has taken note of the arguments of the interested parties on injury examination aspect and addressed the issues raised at appropriate places in this final findings statement to the extent these arguments are considered relevant to the investigations. The Authority has examined the injury parameters objectively taking into account the facts before it and the arguments of the interested parties.

35. The Authority also notes that the Hon'ble Supreme Court, in the Reliance Industries Vs Designated Authority held that the Authority is required to carry out the determination of the injury and NIP for the 'domestic industry as whole' and not in respect of any particular company or enterprise. Therefore, in compliance with the above orders, the Authority called for cost and injury information from all the other known domestic producers. However, these producers have declined to provide any information on the above subject on the basis of their

interpretation of the said judgment. It has been argued by the other known producer that the said judgment of the Hon'ble Court does not require inclusion of all domestic producers in the NIP and injury determination. Further, the other domestic producer has argued that the Designated Authority is interpreting the words "domestic industry as a whole" used by the Hon'ble Supreme Court in its judgment to mean the "domestic producers as a whole". In this connection, it has been submitted that the Hon'ble Court in that judgment has held that the injury as well as NIP has to be determined for the "domestic industry as a whole" and not in respect of any particular company or enterprise. In the same paragraph, the Hon'ble Supreme Court refers to the definition of domestic industry under Rule 2(b). Throughout the discussions, the Supreme Court has used the words "domestic industry as a whole" and not "domestic producers as a whole". Further, at no stage has the Supreme Court held that the term "domestic industry" has to be interpreted in any manner different from the definition provided in Rule 2(b). On the other hand, as stated earlier, the Court has clearly referred to the definition of "domestic industry" in the same paragraph.

36. The Authority notes that the above interpretation of the Judgment of the Hon'ble Court may not be in conformity with the said judgment as the review application filed by the Authority has been dismissed by the Hon'ble Court. Therefore, the Authority has proceeded with the determination of the injury and NIP for the domestic industry as a whole to include all domestic producers of the subject goods to the extent the same was reasonably available. It is noted that there are a number of other very small domestic producers apart from M/s Reliance Industries Ltd. who is one of the major producer of the subject goods in India having a share of approximately 33% in the total domestic production. The Authority has examined the cost and injury information of the major producer M/s Reliance Industries Ltd. from its Cost Audit Reports as available with the Cost Audit Branch of the Ministry of Company Affairs. For the other very small domestic producers, the cost and injury information is not available in the form of Cost Audit Reports or in any other form. It is also noted that these other very small producers collectively accounts for a share of 14% in the total domestic production. Therefore, the impact of these very small producers would not be significant. Accordingly, the injury examination has been carried out taking into account the information in respect of 11 known producers of the subject goods accounting for about 86% of the total domestic production in India. It is also noted that with respect to each of injury parameters 'domestic industry as a whole' includes the information of M/s Reliance industries Ltd. (with a total share of 86% which includes M/s RIL share of 33%) but not of all the producers in India. The term 'domestic industry' includes only the applicant producers (having a share of 52%).

The injury analysis for all the injury parameters for the domestic industry as a whole could not be made as the requisite information for some of the injury parameters was not available with the Authority, which has been clearly indicated while making the injury analysis for each factor in the following paragraphs.

37. An analysis of the injury parameters as envisaged under the Rules has been carried out in the following paragraphs:

Volume of Imports

i) The Authority has examined the volume of imports from the subject country on the basis of the imports of subject goods as reflected by the official statistics published by the DGCI&S. As already mentioned earlier, the Authority has reexamined the transaction wise analysis of the imports of subject goods from subject countries and on the basis of reexamination, the figures of the volume and value of imports of subject goods have been revised. It is observed that that the share of subject country in total imports has decreased to 11% (during the POI) of the imports made in the base year.

	April 01 to March 02	April 02 to March 03	April 03 to March 04	POI (Annualised)
Imports from Subject Countries (MT)	33256	41046	15891	3856
Imports from Other Country- Attracting ADD	1461	1455	8693	32132
Imports from Other Remaining Countries	4797	2886	2253	1413
Total Imports (MT)	39514	45387	26837	37401

	April 01 to March 02	April 02 to March 03	April 03 to March 04	POI (Annualised)
Imports from Subject Countries	100	123.43	47.78	11.59

(MT)				
Imports from Other Country-Attracting ADD	100	99.59	595.00	2199.32
Imports from Other Remaining Countries	100	60.17	46.97	29.46
Total Imports (MT)	100	114.86	67.92	94.65

Market share of Imports from subject country in the total imports and demand

ii) The Authority finds that the imports from subject countries in comparison to total demand in India have decreased to a level of .50% from a level of over 5% during the base year. The trend in percentage increase from year to year is shown in the table below. In the total imports, it has declined to 10% during the POI from a high of 84% during the base year.

<u>Total Demand</u>				
	April 01 to March 02	April 02 to March 03	April 03 to March 04	POI (Annualised)
Total Demand (MT)	646810	683470	708597	766477
Trend	100	106	110	119

Share of Imports

	April 01 to March 02	April 02 to March 03	April 03 to March 04	POI (Annualised)
Imports from Subject Countries (MT)				
Indonesia	13421	24075	2812	228
Malaysia	4456	3220	4922	821
Chinese Taipei	9995	9719	5261	691

Thailand	5383	4032	2896	2116
Total Subject Countries	33256	41046	15891	3856
Imports from Other Country-Attracting ADD	1461	1455	8693	32132
Imports from Other Remaining Countries	4797	2886	2253	1413
Total Imports (MT)	39514	45387	26837	37401
Total Domestic Sales	607296	638083	681760	729076
Total Demand (MT)	646810	683470	708597	766477
% Share of Imports from Subject Countries:				
Total Imports	84%	90%	59%	10%
Total Demand (MT)	5.14%	6.01%	2.24%	0.50%
% Share of Imports from Other Country-Attracting ADD				
Total Imports	3.70%	3.21%	32.39%	85.91%
Total Demand (MT)	0.23%	0.21%	1.23%	4.19%
% Share of Imports from Other Remaining Countries in:				
Total Imports	12.14%	6.36%	8.40%	3.78%
Total Demand (MT)	0.74%	0.42%	0.32%	0.18%

Imports from subject country as % of domestic production:

iii) The Authority notes that dumped imports from subject countries as percentage of domestic production of the domestic producers have declined from a level of 4.24% in the year 2001-02 to 0.41% during the period of investigation.

Share of Imports

	April 01 to March 02	April 02 to March 03	April 03 to March 04	POI (Annualised)
Imports from Subject Countries (MT)				
Indonesia	13421	24075	2812	228

Malaysia	4456	3220	4922	821
Chinese Taipei	9995	9719	5261	691
Thailand	5383	4032	2896	2116
Total Subject Countries	33256	41046	15891	3856
Imports from Other Country- Attracting ADD	1461	1455	8693	32132
Imports from Other Remaining Countries	4797	2886	2253	1413
Total Imports (MT)	39514	45387	26837	37401
Total Domestic Sales	607296	638083	681760	729076
Total Demand (MT)	646810	683470	708597	766477
Total Domestic Production	784460	840065	900245	936775
% Share of Imports from Subject Countries:				
Total Domestic Production	4.24%	4.89%	1.77%	0.41%
% Share of Imports from Other Country-Attracting ADD				
Total Domestic Production	0.19%	0.17%	0.97%	3.43%
% Share of Imports from Other Remaining Countries in:				
Total Domestic Production	0.61%	0.34%	0.25%	0.15%

Effect of Dumped Imports on prices in the domestic market for like products:

Price Undercutting

iv) With regard to the effect of the dumped imports on domestic prices, it has been examined whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. A comparison for product concerned was made between the landed value of exported product and the average selling price of the domestic industry for domestic market net of all rebates and taxes for sales made to unrelated

customers, at the same level of trade. The prices of the domestic industry were determined at the ex factory level. The CIF prices of the subject country concerned were adjusted for post importation applicable duties. This comparison showed that during the period of investigation, the subject goods originating in subject country was sold in the Indian market at prices which undercut the domestic industry's prices when expressed as a percentage of the domestic selling prices of the domestic industry as is evident from the table below.

In order to assess the effect of imports on the domestic market an analysis of import prices over the injury period was made. It was noted that the exporters from subject countries have decreased their prices and the landed value has increased by 16% while the domestic selling prices have also increased during this period by 30%. Thus, the price undercutting has significantly increased during the injury period and remains significant during the POI with the exception of Thailand, which shows negative price undercutting.

Price Undercutting				
	April 01 to March 02	April 02 to March 03	April 03 to March 04	POI (Annualised)
Selling Price Rs. / MT-Domestic Industry as a Whole	****	****	****	****
Indexed	100	112	120	130
Landed Value Rs. / MT				
Indonesia	46829	61182	62986	59588
Malaysia	71756	74040	61709	63434
Chinese Taipei	61116	59130	55451	54905
Thailand	62111	59356	62254	71886
Subject Countries	56937	61525	59962	66317
Indexed	100	108	105	116
Price Undercutting Rs. / MT				
Indonesia	****	****	****	****
Malaysia	****	****	****	****
Chinese Taipei	****	****	****	****
Thailand	****	****	****	****
Subject	****	****	****	****

Countries				
Price Undercutting (%)				
Indonesia	****	****	****	****
Malaysia	****	****	****	****
Chinese Taipei	****	****	****	****
Thailand	****	****	****	****
Subject Countries	****	****	****	****
Price Undercutting (%) -Range				
Indonesia	17% to 1%	-8 to 5%	1% to 8%	8% to 20%
Malaysia	-50% to -15%	-40 to -10%	1% to 11%	5% to 14%
Chinese Taipei	-25% to -5%	-10 to 1%	8% to 20%	15% to 28%
Thailand	-26% to -6%	-12 to 1%	1% to 10%	-8% to 5%
Subject Countries	-12% to 1%	-8 to 5%	1% to 15%	4% to 16%

M/s All India Texturisers Association has also stated by quoting the decision of the CESTAT in Appeal No. C-848-849/05-AD dated 3rd August 2006 that the issue of price undercutting causing injury would be meaningless in case volume of dumped imports is insignificant in its comparison with the domestic production and domestic consumption.

The Authority notes that the abovementioned decision by the Hon'ble CESTAT in Forum of Acrylic Fibre Manufacturers Vs. Designated Authority 2006 (202) ELT 257 has been rendered in the case of mid-term review investigation. It is however noted that in a sunset review investigation, the continuance or recurrence of injury has to be 'likely' and the injury analysis has to focus on the future or likelihood situation of the domestic industry in terms of continuance or recurrence of injury if duties are allowed to expire.

Price depression and Suppression

v) There has been no decline in the selling price of the domestic industry during the injury period. Therefore no price depression has been caused to the domestic industry. However, it is seen that the landed price from subject countries have not increased in the same proportion as compared to the cost of production of the subject goods of the domestic

industry implying that the domestic industry has suffered price suppression on account of dumped imports from subject countries.

	April 01 to March 02	April 02 to March 03	April 03 to March 04	POI (Annualised)
Cost of Production Rs. / MT-Domestic Industry as a Whole	****	****	****	****
Indexed	100	108	104	132
Increase Year to Year		****	****	****
Indexed		100	-58	591
Selling Price Rs. / MT-Domestic Industry as a Whole	****	****	****	****
Indexed	100	112	120	130
Increase Year to Year		****	****	****
Indexed		100	78	112
Landed Value from Subject Countries Rs. / MT				
Indonesia	46829	61182	62986	59588
Malaysia	71756	74040	61709	63434
Chinese Taipei	61116	59130	55451	54905
Thailand	62111	59356	62254	71886
Total Subject Countries	56937	61525	59962	66317
Indexed	100	108	105	116

Price underselling

vi) The Authority has also examined the claim of the petitioner that the domestic industry is suffering on account of the price underselling from the sale of subject goods. The Authority notes that price underselling is an important indicator to make an assessment of the injury. The Authority has worked out the Non-injurious price for the product under consideration and compared the same with the landed value to arrive at the extent of price underselling. The analysis shows a significant level of incidence of price underselling causing injury to the domestic industry from the dumped imports from subject country.

282161/07-8

Price Underselling	
	POI (Annualised)
Non Injurious Price Rs. / MT	****
Landed Value Rs. / MT	
Indonesia	59588
Malaysia	63434
Chinese Taipei	54905
Thailand	71886
Subject Countries	66317
Price Underselling Rs. / MT	
Indonesia	****
Malaysia	****
Chinese Taipei	****
Thailand	****
Subject Countries	****
Price Underselling (%)	
Indonesia	****
Malaysia	****
Chinese Taipei	****
Thailand	****
Subject Countries	****
Price Underselling (%) - Range	
Indonesia	12% to 30%
Malaysia	15% to 28%
Chinese Taipei	20% to 39%
Thailand	3% to 12%
Subject Countries	8% to 22%

Situation of the Domestic Industry

vii) For the examination of the impact of the imports on the domestic industry in India, the Authority considered such indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilisation, sales quantum, stock, profitability, net sales realisation, the magnitude and margin of dumping, etc. in accordance with Annexure II (iv) of the Rules supra. In line with the Supreme Court Judgment, the Authority has proceeded with the determination of the injury and NIP for the domestic industry as a whole to include all domestic producers of the subject goods to the extent the same was relevant and reasonably available. It

is noted that there are a number of other very small domestic producers apart from M/s Reliance Industries Ltd. who is one of the major producer of the subject goods in India having a share of approximately 33% in the total domestic production. The Authority has examined the cost and injury information of the major producer M/s Reliance Industries Ltd. from its Cost Audit Reports as available with the Cost Audit Branch of the Ministry of Company Affairs. For the other very small domestic producers, the cost and injury information is not available in the form of Cost Audit Reports or in any other form. It is also noted that these other very small producers collectively accounts for a share of 14% in the total domestic production. Therefore, the impact of these very small producers would not be significant. Accordingly, the injury examination has been carried out taking into account the information in respect of 11 known producers of the subject goods accounting for about 86% of the total domestic production in India. It is also noted that with respect to each of injury parameters 'domestic industry as a whole' includes the information of M/s Reliance industries Ltd. but not of all the producers in India. The term 'domestic industry' includes only the applicant producers. The injury analysis for all the injury parameters for the domestic industry as a whole could not be made as the requisite information for some of the injury parameters was not available with the Authority, which has been clearly indicated while making the injury analysis for each factor in the following paragraphs.

Sales and Market share of domestic producers:

viii) It is noted that sales of the domestic industry have increased and domestic industry as a whole have increased and the increased is in line with the increase in demand. Further, the Authority finds that the market share of the domestic industry and the imports from the subject countries in the demand of subject goods in India has been as under:

Sales (MT)				
	April 01 to March 02	April 02 to March 03	April 03 to March 04	POI (Annualised)
Domestic Industry	307826	310022	324328	392195
Other Domestic Producers	202429	175147	234039	231456
Domestic Industry as a Whole	510255	485169	558367	623651

**Market Share of
Domestic
Industry**

	April 01 to March 02	April 02 to March 03	April 03 to March 04	POI (Annualised)
Sales (MT):				
Domestic Industry	307826	310022	324328	392195
Other Domestic Producers	202429	175147	234039	231456
Domestic Industry as a Whole	510255	485169	558367	623651
Total Demand (MT)	646810	683470	708597	766477
Market Share of:				
Domestic Industry (%)	48	45	46	51
Other Domestic Producers (%)	31	26	33	30
Domestic Industry as a Whole (%)	79	71	79	81

The Authority finds that the share of the domestic producers have increased marginally from 48% during 01-02 to 51% during the POI while the share of the domestic industry as a whole has increased by 2 percentage points over the same period. . It is also noted that over the same period the demand has grown by 18%. It shows that the domestic industry was able to achieve growth though marginally during the injury period. It is thus noted that the market share of the domestic industry has not been adversely affected because of dumped imports from subject country.

Production & Capacity Utilization:

Production (MT)

	April 01 to March 02	April 02 to March 03	April 03 to March 04	POI (Annualised)
Domestic Industry	385167	402651	423669	484734
Other Domestic Producers	269188	247679	255620	252412
Domestic Industry as a Whole	654355	650330	679289	737146

Capacity (MT)

	April 01 to March 02	April 02 to March 03	April 03 to March 04	POI (Annualised)
Domestic Industry	389425	428175	478196	513208
Other Domestic Producers	267174	275274	268450	261979
Domestic Industry as a Whole	656599	703449	746646	775188

**Capacity
Utilisation%**

	April 01 to March 02	April 02 to March 03	April 03 to March 04	POI (Annualised)
Domestic Industry	98.91%	94.04%	88.60%	94.45%
Other Domestic Producers	100.75%	89.98%	95.22%	96.35%
Domestic Industry as a Whole	99.66%	92.45%	90.98%	95.09%

ix) The Authority finds that the capacity utilization of the domestic industry has declined from 98.91% in the year 2001-02 to 94.45% during the period of investigation. Thus, the decline of in the capacity utilization and on the other hand increase in dumped imports from subject country over the injury investigation period appears to have adversely affected the domestic industry.

Inventories:

x) The Authority notes that the level of inventories of the domestic industry has come down during the period of investigation while the inventories as a percentage of sales declined significantly during the injury period.

<u>Inventories</u>	April 01 to March 02	April 02 to March 03	April 03 to March 04	POI (Annualised)
Sales (MT)- Domestic Industry	307826	310022	324328	392195
Inventories- Domestic Industry	29632	29605	21878	6887
Inventories as percentage of Sales	9.63%	9.55%	6.75%	1.76%
Indexed	100	99	70	18

Factors affecting Domestic Prices:

xi) The Authority notes that the level of price undercutting from each of the subject countries is significant with the exception of Thailand and two cooperating exporters, one each from Indonesia and Malaysia as a result of dumped imports from subject countries. However, price underselling on account of dumped imports from each of the subject countries and cumulatively also is significant as the landed value of imports from each of subject countries is significantly lower than the non-injurious price of the domestic industry. Though the landed value/MT of imports from subject countries have increased during the period of investigation as compared to the year 2001-2, the cost of raw material has increased much more as a result of the soaring crude oil prices. This clearly indicates that the effect of dumped imports on the domestic prices is much more than what is reflected from a plain analysis of the data. The Authority notes that apart from the applicants there are few other domestic producers of the subject goods in the domestic market in India catering to about 48% of the total production. However, the data of these producers (covering 33% of the total production which have been taken on board while determining the parameters for domestic industry as a whole) do not show significant cost and price difference as compared to the domestic industry. Further, the injury investigation has also been carried out for the domestic industry as a whole (covering most of the injury parameters the information of which could be gathered), including the other known producers (covering a total of 86% of the domestic producers). The Authority also notes that the dumped imports from the subject countries have been found to have significant price undercutting and underselling effect (cumulatively) on the domestic industries prices. With regard to selling prices of the domestic industry, it is noted that the same have increased during the period of investigation as compared to the base year. Thus, the principal factor affecting the domestic prices appear to be the dumped prices of the subject goods from the subject country.

Magnitude of Margin of Dumping:

xii) The Authority finds that the magnitude of the margin of dumping for subject goods from the subject countries is significant.

Employment, Wages and Productivity:

xiii) The Authority notes that the domestic industry has added additional capacity and employed a number of persons. Accordingly, number of employees and wages paid to them has gone up during the injury investigation period. The Authority finds that the productivity per employee during the period of investigation has increased as compared to base year 2001-02. It is therefore noted that the loss of productivity is not a cause of injury to the Domestic Industry.

Employees, Wages and Productivity

	April 01 to March 02	April 02 to March 03	April 03 to March 04	POI (Annualised)
Employees (Nos.)- Domestic Industry	3254	3398	3434	3758
Wages (Rs. Lacs)- Domestic Industry	3413	3521	3825	4495
Production of Domestic Industry	385167	402651	423669	484734
Productivity per employee / MT	118	118	123	129

Profitability:

xiv) The Authority notes that the domestic industry has not been able to achieve profits during the period of investigation. The Domestic Industry achieved a level of profit of 1.30% in the year 2001-2 which however, came down to a negative level of (0.99%) during the period of investigation as may be seen from the table given hereunder:

Profit /Loss (Rs. Lacs):				
Domestic Industry	****	****	****	****
Other Domestic Producers	****	****	****	****
Domestic Industry as a Whole	****	****	****	****
Domestic Industry	100	261	603	-103
Other Domestic Producers	-100	-66	198	-62
Domestic Industry as a Whole	-100	-27	359	-96
Profit /Loss (%):				
Domestic Industry	****	****	****	****
Other Domestic Producers	****	****	****	****
Domestic Industry as a Whole	****	****	****	****

Return on Investment (Capital Employed):

xv). The Authority notes that return on capital employed has also declined and followed the same trend as that of profitability. The domestic industry could earn ****% return on its investment during the period of investigation whereas it earned ****% return in the previous year 2003-04 and ****% during the base period.

<u>Return on Capital Employed</u>				
	April 01 to March 02	April 02 to March 03	April 03 to March 04	POI (Annualised)
Capital Employed (Rs. Lacs)-Domestic	****	****	****	****

Industry				
Indexed	100	121	102	102
Profit / Loss before Interest (Rs. Lacs)- Domestic Industry	****	****	****	****
Indexed	100	98	134	25
ROCE (%) - Domestic Industry	****	****	****	****
Indexed	100	80.94	131.04	18.66

Actual and potential negative effect on cash flows:

xvi) The Authority finds that the cash profit / cash flow has also followed the same trend as that of the profitability and during the period and it has come down significantly during the POI as compared to the base year 2001-02.

<u>Cash Profit</u>				
	April 01 to March 02	April 02 to March 03	April 03 to March 04	POI (Annualised)
Cash Profit (Rs. Lacs)- Domestic Industry	****	****	****	****
Indexed	100	138	190	90
Cash Profit Rs. / MT- Domestic Industry	****	****	****	****
Indexed	100	145	174	74

Growth:

xvii) The Authority notes that though the sales volume of the domestic industry has gone up during POI, yet growth in sales volume during POI is less than the previous year and growth in the total demand over the same period. It appears that the various parameters pertaining to operating performance of the domestic industry has suffered adversely. The various growth parameters are listed below.

Growth				
	April 01 to March 02	April 02 to March 03	April 03 to March 04	POI (Annu alised)
Demand		6	10	19
Production-Domestic Industry as a Whole		-1	4	9
Market Share- Domestic Industry as a Whole		-10	-0.11	3
Sales Volume- Domestic Industry as a Whole		-5	15	12
Profit- Domestic Industry as a whole		-28	336	-89
Cash Flow / MT- Domestic Industry as a whole		65	208	-79
ROCE-Domestic Industry		-19	62	-86

Ability to Raise Capital Investments:

xviii). The Authority finds that in view of the losses being suffered by the domestic industry on the product under consideration during the POI, the ability of the domestic industry to raise capital investment may be adversely affected in view of the negative profits of the domestic industry and declining returns during the period of investigation.

E. CAUSAL LINK AND OTHER FACTORS

Effect of dumped imports

38. Between 2001-02 and the POI, the dumped imports from subject countries as percent of total import of subject goods have decreased to 11% of the imports made in the base year. However, while examining the price effect i.e. whether the dumped imports have significantly undercut the price of the subject good in India, the Authority found that the landed value of the subject goods from subject countries was lower than

2821 GI/07-9

the selling price of the domestic industry indicating that the dumped imports from subject countries have undercut the selling price of the domestic industry significantly. It is found that the price undercutting and the pricing behaviour of landed value of imports has forced the domestic industry to keep the domestic prices at an unremunerative level. The domestic industry could not increase the selling price to recover the full increase in cost of production due to dumped imports and had to suffer financial losses during the POI. The undercutting along with price suppression in effect eroded the profitability of the domestic industry. On the basis of the foregoing, it is held that the domestic industry has suffered material injury due to dumped imports from subject countries during the POI.

EFFECT OF OTHER FACTORS

Trade restrictive practice and competition between the foreign and domestic producers:

39. The Authority did not find any trade restrictive practices followed by the Indian producers and other competing industries. As regards the Domestic Industry's inability to fill the gap between the domestic demand and their own production, it is observed that the imposition of anti-dumping duties does not amount to any kind of restriction on suppliers and producers for supplying the subject goods in the domestic market, which could have contributed to the injury to the domestic industry. Moreover, it is also noted that the domestic industry has an unutilized capacity to cater to the local demand if the competition in the market takes place at a fair price.

Contraction of demand or Changes in the pattern of consumption:

40. It is noted that there is no contraction in the demand during the period under consideration. On the contrary, the overall demand has increased during the POI. Therefore, the possible decline in demand is not a factor, which could have caused injury to the domestic industry.

Technology:

41. None of the interested party has submitted any evidence that the technology is a factor of injury to the domestic industry.

Export performance:

42. The Domestic Industry has exported the subject goods during the period of investigation as well as during previous years. The Authority notes that the export performance of the domestic industry has shown improvement. The profitability of the domestic and exports sales have been segregated for the purpose of the injury examination. Therefore, injury caused due to exports (if any) has not been attributed to the performance of the domestic industry in the domestic market.

Productivity:

43. The productivity of the domestic industry has improved during the period of investigation as compared to the base year 2001-02. The productivity *per se* could not be the cause of injury to the domestic industry.

Other arguments

44. It has been submitted by some interested parties that demand for POY is high right from the year 2001-02 as compared to indigenous production and the indigenous industry has tremendously benefited by creating shortage. The Authority has examined this statement and notes that the associations have merely made statements without evidence or cogent reasoning in support of their argument. With regards to their other arguments that as per the balance sheets of the domestic producers, they are not making losses and most of the companies are profit-making concerns, it is noted that anti-dumping investigations are product specific and any conclusions based on the balance sheet of the company which contains the information for other products also, is not appropriate. This position is clear from the plain language of the anti-dumping laws and the pronouncement of the Appellate Tribunal also. The Authority has indeed based its final findings on the basis of the records pertaining to the product under consideration, which have also been duly verified. With regards to the submissions of the interested parties that almost all the companies are increasing their capacities, which indicate that the import of POY has not affected the indigenous industry at all, it is noted that some of the applicants are indeed increasing their capacities, the fact which the interested parties have also admitted. It is also noted that the domestic industry has submitted that the decision to increase capacities was taken prior to the initiation of investigation and there is a specific lead time during which the domestic industry faced the injurious effect of dumping from China. The issue has been examined and it is noted that capacities are added to take advantage of the growing market and economies of scale. Therefore, the mere fact that some components of the domestic industry have increased their capacities does not lead to the conclusion that they may not be suffering on account of the dumped imports from subject country. With regards to the submission of various interested parties that the excise duty on POY has been reduced over the years and the same has not been passed on to customers, it is noted that the analysis of the selling prices is always made at the ex-factory level. The ex-factory price does not include any element of excise duty or the expenses after clearance from the factory. Therefore, the statement of the federation is not relevant in this investigation.

F. CONCLUSION ON CONTINUATION OF INJURY AND CAUSAL LINK:

45. In view of the foregoing the Authority considers that the quantum of dumped imports of subject goods from the subject countries have

declined in absolute terms as well as in relation to total demand and domestic production in India. More over, parameters such as market share of the domestic industry in the total demand, sales, production, inventory have not shown any decline indicating that the absence of any significant volume injury to the domestic industry and also to domestic industry as a whole. However, the domestic industry has suffered significantly on account of the price effects as the price undercutting which was negative during the base year became positive and significant during the POI. The landed prices of the dumped subject goods from the subject country have shown a consistent decline in spite of the increase in the cost of production of the domestic industry indicates price suppression. It is also noted that the profitability of the domestic industry for product under consideration has become negative during the period of investigation and the return on investment and cash flows have been adversely affected and declined to a meager level in the period of investigation. The dumping margin from the subject country is considered significant. On the basis of the foregoing, it is held that the domestic industry has suffered material injury as envisaged under the Rules. No other factor, other than the dumped imports from subject country, have been brought to the notice of the Authority, that could have caused injury to the domestic industry.

G. LIKELYHOOD OF CONTINUATION OF DUMPING AND INJURY

Low level of imports in POI and unutilized capacity of the exporters in the subject countries :

46. It has been submitted by the domestic industry that the imports from the subject countries are lower only during the period of investigation whereas for all the other years are significant and substantial not only as a share of total imports but also in relation to total demand and domestic production. It has also been submitted that the lower level of imports during the period of investigation as compared to other years is only due to the fact that the exporters from the subject countries have consciously and strategically reduced the exports with a view to avoid re-imposition of anti-dumping duties. The significant and substantial imports from the subject countries in the previous years prior to POI and lower imports in POI gives a clear and strong indication about the likely future behavior of the exporters from subject countries. It has been further submitted that the dumped imports from the subject countries in all probability would surge in case anti-dumping duties are lifted against the subject countries and the domestic industry would continue to be injured. No other comments have been received from any other interested parties in this investigation. In this review, one exporter from Indonesia and Thailand have cooperated and after examining their information, it is noted that these exporters have substantial unutilized capacity and likelihood of their continued dumping into Indian market remain strong.

Price undercutting and Price underselling:

48. It may be seen from the following table that the price underselling and price undercutting from the subject countries is significant during the period of investigation.

Price Undercutting				
	April 01 to March 02	April 02 to March 03	April 03 to March 04	POI (Annualised)
Selling Price Rs. / MT-Domestic Industry as a Whole	****	****	****	****
Indexed	100	112	120	130
Landed Value Rs. / MT				
Indonesia	46829	61182	62986	59588
Malaysia	71756	74040	61709	63434
Chinese Taipei	61116	59130	55451	54905
Thailand	62111	59356	62254	71886
Subject	56937	61525	59962	66317
Countries				
Indexed	100	108	105	116
Price Undercutting Rs. / MT				
Indonesia	****	****	****	****
Malaysia	****	****	****	****
Chinese Taipei	****	****	****	****
Thailand	****	****	****	****
Subject Countries	****	****	****	****
Price Undercutting (%)				
Indonesia	****	****	****	****
Malaysia	****	****	****	****
Chinese Taipei	****	****	****	****
Thailand	****	****	****	****
Subject Countries	****	****	****	****
Price Undercutting (%) -Range				
Indonesia	17% to 1%	-8 to 5%	1% to 8%	8% to 20%
Malaysia	-50% to -15%	-40 to -10%	1% to 11%	5% to 14%
Chinese Taipei	-25% to -5%	-10 to 1%	8% to 20%	15% to 28%
Thailand	-26% to -6%	-12 to 1%	1% to 10%	-8% to 5%
Subject Countries	-12% to 1%	-8 to 5%	1% to 15%	4% to 16%

47.

Price Underselling

	POI (Annualised)
Non Injurious Price Rs. / MT	****
Landed Value Rs. / MT	
Indonesia	59588
Malaysia	63434
Chinese Taipei	54905
Thailand	71886
Subject Countries	66317
Price Underselling Rs. / MT	
Indonesia	****
Malaysia	****
Chinese Taipei	****
Thailand	****
Subject Countries	****
Price Underselling (%)	
Indonesia	****
Malaysia	****
Chinese Taipei	****
Thailand	****
Subject Countries	****
Price Underselling (%) - Range	
Indonesia	12% to 30%
Malaysia	15% to 28%
Chinese Taipei	20% to 39%
Thailand	3% to 12%
Subject Countries	8% to 22%

49. The level of significant price underselling and undercutting during the period of investigation indicates the likely future behavior of the exporters from the subject countries regarding the pricing of the subject goods. It may be added that these undercutting and underselling have been determined without taking into account the existing anti dumping duties (while calculating the landed value) and this fact itself shows that undercutting and underselling margin are likely to increase should the anti dumping duties are allowed to expire.

High level of dumping margins:

50. It has already been noted that the dumping margin from each of the subject countries is significant in spite of anti-dumping duties being in existence. The significant level of dumping margin from subject countries in the period of investigation indicates the possibility that it would continue to adversely affect the performance of the domestic industry.

Negative profitability shows continued injury:

51. The losses during the period of investigation clearly strongly indicates that the domestic industry continues to be injured and there is every possibility that the significant dumping from the subject countries would continue and recur and further deteriorate the position of the domestic industry in terms of its losses and injury.

Conclusion on likelihood of continuation of dumping and injury

52. Thus, it may be seen from the above that there remains a strong possibility of likelihood of continuation of dumping of subject goods from subject countries and continued injury to the domestic industry should the present anti dumping duties are allowed to expire.

H. MAGNITUDE OF INJURY MARGIN**Determination of Non-injurious price**

53. The Authority determined the non-injurious price for the domestic industry as a whole in accordance with the judgment of the Hon'ble Supreme Court of India as quoted earlier and a detailed disclosure of the methodology of determination of the NIP was made to the domestic industry.

54. The Authority notes that the Non-injurious price of the domestic industry as a whole has been determined in accordance with the judgment of the Hon'ble Supreme Court of India taking into account the guidelines and methodology set by the Hon'ble Supreme Court of India and the weighted average NIP for the domestic industry as a whole as been determines as Rs ****/per MT.

55. The non-injurious price determined by the Authority is the weighted average of all types of the subject goods produced by the domestic industry and the same has been compared with the weighted average landed value of the exports from the subject countries for determination of injury margin. The weighted average landed price of the exports from the subject countries and the injury margins have been worked out as follows:

Injury Margin Calculations

Company/Countries	IM	IM%
M/s Hualon	****	4-8%
M/s Polysindo	****	4-8%
Other Exporters Malaysia	****	10-15%

Other Exporters Indonesia	****.	10-15%
All Exporters Chinese Taipei	****	30-40%
All Exporters Thailand	****	4-8%

I. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST & OTHER ISSUES

56. The Authority holds that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the domestic industry by the unfair trade practices of dumping so as to facilitate re-establish a situation of open and fair competition.

57. The Authority also recognizes that though the imposition of anti-dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using the subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products, however, fair competition in the Indian market will not be reduced by these anti-dumping measures. On the contrary, imposition of anti-dumping measures would eliminate the unfair advantages gained by the dumping practices and would prevent the decline of the domestic industry and help in maintaining availability of wider choice of the subject goods to the consumers.

J. Conclusions:

58. The Authority has, after perusing and considering the foregoing, come to the conclusion that:

1. Subject goods originating in or exported from subject countries have been exported to India below their normal values.
2. The domestic industry has suffered material injury.
3. The injury has been caused to the domestic industry by dumped imports of the subject goods from subject countries.
4. Anti dumping duties are required to be imposed in respect of imports from subject countries, as withdrawal thereof would lead to continuation of dumping and injury.
5. The Authority considers it appropriate to recommend the continuation of anti-dumping duty as modified on imports of subject goods from subject countries in the form and manner described in the table below.

K. Recommendations:

59. The Authority notes that the sunset review investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide positive information on the aspect of dumping, injury and causal link. Having initiated and conducted a final investigation into dumping, injury and causal link between dumping and injury to the domestic industry in terms of the Rules laid down and having definitively established positive

dumping margin against the subject country, as well as material injury to the domestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that continuation of imposition of definitive duty is required to offset dumping and injury.

60. Therefore, Authority considers it necessary to recommend continuation of definitive anti-dumping duty on imports of subject goods from the subject countries in the form and manner described hereunder.

61. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975. Accordingly, definitive antidumping duty equal to the amount indicated in Column 9 of the table below is recommended on all imports of Partially Oriented Yarn (POY) falling under chapter 54 of Custom Tariff Classification Act 1975, originating in or exported from subject countries.

Sl. No	Heading	Description of goods	Specification	Country of origin	Country of Export	Producer	Exporter	Amount US\$/MT	Unit of Measurement	Currency
-1	-2	-3	-4	-5	-6	-7	-8	-9	-10	-11
1	5402	Partially Oriented Yarn	Any	Chinese Taipei	Chinese Taipei	Any	Any	461.52	MT	US\$
2	5402	Partially Oriented Yarn	Any	Chinese Taipei	Any other than Chinese Taipei	Any	Any	461.52	MT	US\$
3	5402	Partially Oriented Yarn	Any	Any other than subject countries	Chinese Taipei	Any	Any	461.52	MT	US\$
4	5402	Partially Oriented Yarn	Any	Thailand	Thailand	Any	Any	83.74	MT	US\$
5	5402	Partially Oriented Yarn	Any	Thailand	Any other than Thailand	Any	Any	83.74	MT	US\$
6	5402	Partially Oriented Yarn	-do-	Any other than subject countries	Thailand	Any	Any	83.74	MT	US\$
7	5402	Partially Oriented Yarn	Any	Indonesia	Indonesia	M/s PT Polysindo Eka Perkasa,	M/s PT Polysindo Eka Perkasa,	88.68	MT	US\$
8	5402	Partially Oriented Yarn	Any	Indonesia	Indonesia	Any other than M/s PT Polysindo Eka Perkasa,	Any other than M/s PT Polysindo Eka Perkasa,	140.05	MT	US\$

9	5402	Partially Oriented Yarn	Any	Indonesia	Any other than Indonesia	Any	Any	140.05	MT	US\$
10	5402	Partially Oriented Yarn	Any	Any other than subject countries	Indonesia	Any	Any	140.05	MT	US\$
11	5402	Partially Oriented Yarn	Any	Malaysia	Malaysia	M/s Hualon Corporation (M) Sdn BHD.	M/s Hualon Corporation (M) Sdn BHD.	74.13	MT	US\$
12	5402	Partially Oriented Yarn	Any	Malaysia	Malaysia	Any other than M/s Hualon Corporation (M) Sdn BHD.	Any other than M/s Hualon Corporation (M) Sdn BHD.	185.03	MT	US\$
13	5402	Partially Oriented Yarn	Any	Malaysia	Any other than Malaysia	Any	Any	185.03	MT	US\$
14	5402	Partially Oriented Yarn	Any	Any other than subject countries	Malaysia	Any	Any	185.03	MT	US\$

L FURTHER PROCEDURE

62. An appeal against the orders of the Central Government that may arise out of this recommendation shall lie before the Customs, Excise and Service tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

63. The Authority may review the need for continuation, modification or termination of the definitive measure as recommended herein from time to time as per the relevant provisions of the Act and public notices issued in this respect from time to time. No request for such a review shall be entertained by the Authority unless the same is filed by an interested party as per the time limit stipulated for this purpose.

R. GOPALAN, Designated Authority

2011/10/1-11